★ वर्ष 45 ★ अंक 1 ★ जनवरी 2018

हँसती दुनिया

₹15/-

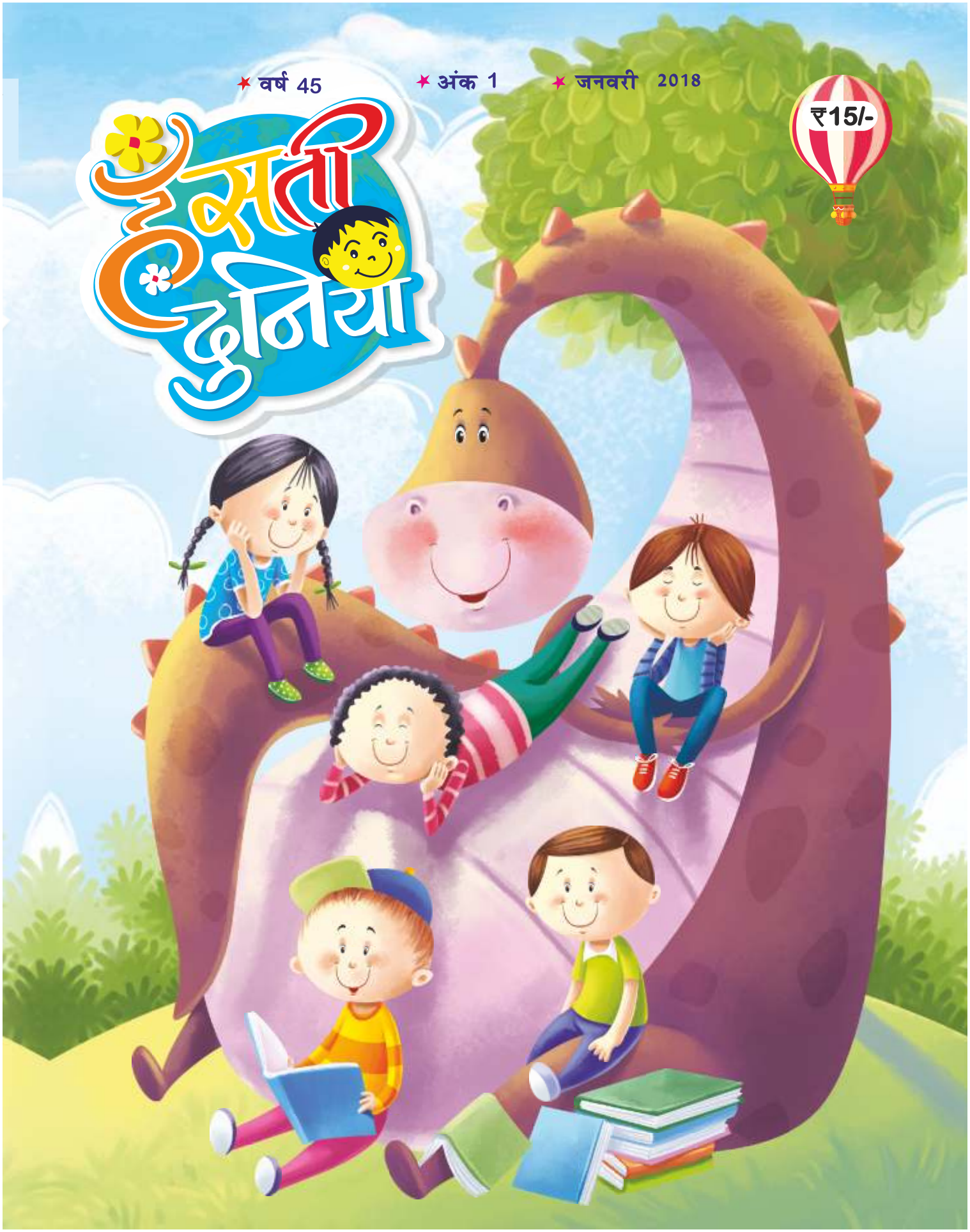

हँसती दुनिया

● वर्ष 45 ● अंक 1 ● जनवरी 2018 ● पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक: विमलेश आहूजा
सहायक सम्पादक: सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries
Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की शुभ कामनाएं

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
10. समाचार
20. वर्ग पहेली
32. अनमोल वचन
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

9. आम और बाँस
: दिनेश दर्पण

17. झटकू का घमण्ड
: कमल सोगानी

21. जन्मभूमि से प्यार
: राधेलाल 'नवचक्र'

24. ईर्ष्यालु गबरू लोमड़
: राजकुमार जैन

27. चतुराई और भाग्य
: किशोर डैनियल

31. ईश्वर मेरे साथ
: जयेन्द्र

40. कीमती दाने
: श्यामसुन्दर गर्ग

41. चन्द्रगुप्त और हेलेन
: रूपनारायण काबरा

कविताएं

8. गणतंत्र दिवस ..., नया वर्ष आया
: हरजीत निषाद

19. नए वर्ष में
: डॉ. रोहिताश्व

23. सर्दी
: डॉ. हरीश निगम

23. जाड़ाराम
: महेन्द्र कुमार वर्मा

30. देश हमारा
: डॉ. परशुराम शुक्ल

39. दो बाल कविताएं
: कमलसिंह चौहान

47. चिड़िया
: गोविन्द भारद्वाज

47. तोताराम
: कीर्ति श्रीवास्तव

विशेष/लेख

6. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

7. सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

16. बर्फीले खेल के मैदानों की ...
: फेनम सोगानी

22. कोमोडो ड्रैगन
: डॉ. विनोद गुप्ता

28. मूंगफली
: राजकुमार जैन

33. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

42. अनुशासित चींटियों का ...
: कैलाश जैन

46. रंग लाई ...
: जयेन्द्र

धन्यवाद ...

जैसे ही अध्यापक जी ने कक्षा में प्रवेश किया। सभी विद्यार्थियों ने उठकर उनका अभिवादन किया तो अध्यापक जी ने भी सभी का धन्यवाद किया।

इतने में एक विद्यार्थी ने कहा– सर, नया वर्ष आने वाला है और इस बार भी हमें संकल्प लेना है परन्तु समझ नहीं आ रहा कि क्या संकल्प लें।

इस पर अध्यापक जी ने फिर कहा– धन्यवाद।

इस वर्ष हमें उन सभी का धन्यवाद करना है, जिन्होंने हमारी कभी भी सहायता की है या कर रहे हैं। जैसे कक्षा में ही किसी की पेन या पेन्सिल गिर जाती है तो दूसरा विद्यार्थी उसे उठाकर आपको देता है या कोई आपका प्रश्न आपको समझा देता है तो हमें उसे भी धन्यवाद कहना चाहिए।

इस प्रकार घर में भी बहन–भाई, माता–पिता आपका कोई भी कार्य करें तो उन्हें भी धन्यवाद अवश्य कहें। कार्य छोटा हो या बड़ा जिसने भी आपके लिए किया है, वह परिचित हो सकता है या अपरिचित भी, मित्र भी हो सकता है और दूसरा अन्य व्यक्ति भी।

यह धन्यवाद उस कार्य करने वाले के प्रति आभार होता है और सम्मान भी। अगर हम इस प्रकार का संकल्प लेंगे तो वर्ष की समाप्ति से पहले ही धन्यवाद करना हमारी आदत बन जाएगी। इससे हमारे व्यक्तित्व में भी निखार आएगा और आत्म–सम्मान भी बढ़ेगा।

प्यारे साथियों! नववर्ष तो हर बार एक साल व्यतीत होने के बाद फिर आयेगा परन्तु हमें सोचना है कि हम केवल संकल्प ही न लेते रहें, उन्हें अपने आचरण में भी लाएं। केवल धन्यवाद कहने से या आदत बन जाने से हमारा कर्त्तव्य पूरा नहीं हो जाता। धन्यवाद के साथ नम्रतापूर्ण व्यवहार एवं वाणी का प्रयोग भी अनिवार्य है। वरना यह तो एक मशीनी प्रक्रिया ही बन जाएगी। इसके साथ–साथ हमारा कार्य करने वाले के प्रति हमारा कृतज्ञता का भाव भी होना चाहिए। कृतज्ञता ही नम्रतापूर्ण व्यवहार को आमंत्रित करती है और हमारा सद्‌गुणों की ओर चलने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

धन्यवाद केवल देना ही नहीं है बल्कि हमें दूसरों के कार्य में हाथ बंटाकर उन्हें सहयोग भी देना है। फिर धन्यवाद हमारे पीछे–पीछे भी आ जाएगा और एक चक्र बन जाएगा। फिर हमें समझ आ जाएगा कि यह एक सहज जीने का साधन है जिससे हमारा व्यवहार सबके प्रति नम्र, मधुर और सम्मानजनक हो जाएगा।

आओ हम भी परमपिता–परमात्मा का धन्यवाद करें जिसने हमें जीवन दिया। हमारे लिए सूर्य, चांद–सितारे बनाए, वायु, जल, अग्नि बनाई। हमें धरती एवं आकाश देकर धन्य किया। हम परमात्मा का धन्यवाद करें कि इसने हमें बुद्धि, विवेक और ज्ञान की ज्योति दी। सुन्दर समाज, परिवार, गुरुजन, शिक्षक और अनगिनत वस्तुएं भी दीं। जीवन के साथ–साथ जीने का सामान भी दिया, जिसका हमने सम्मान भी करना है और धन्यवाद भी...।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 163

धीआं पुत्तर रिश्तेदारी एह ढलदी होई छाया ए।
माल धन ते महल माड़ियां एह सभ कूड़ी माया ए।
सभनां इक दिन टुर जाणा ए जो वी जग विच आया ए।
स्वासां नूं तूं अपणा समझें एह तां माल पराया ए।
इक वारी जिस वेख ब्रह्म नूं इक छिन नग़मा गाया ए।
कहे अवतार चौरासी दे ओह गेड़ां विच न आया ए।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि रिश्ते–नाते ढलती हुई छाया के समान हैं। संसार में लोगों के पास जो महल–माड़ियां, धन–सम्पदाएं आदि हैं, ये सब भी चलती–फिरती छाया के समान हैं। जिस माल–धन (माया) के पीछे लोग भाग रहे हैं, यह मिथ्या है और सदैव रहने वाली नहीं हैं।

शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी मानव को सचेत कर रहे हैं कि संसार में जो भी आया है उसका जाना निश्चित है। इन्सान जिन स्वांसों को अपना मान रहा है, उन स्वांसों पर भी उसका नियंत्रण नहीं है। यें स्वांसें भी पराया धन हैं, ये परमात्मा के द्वारा दी हुई हैं। प्रभु जब चाहे इन्हें समाप्त कर सकता है। चौरासी लाख योनियों का चक्कर संसार के सभी जीवों को अपनी पकड़ में लिए हुए है। इनसे छूट पाना सहज नहीं है। हाँ, यह निश्चित है कि जिसने एक बार सद्गुरु की शरण में आकर ब्रह्म का दर्शन करके इस प्रभु का गुण गाया वह फिर कभी जन्म–मरण के चक्कर में नहीं फंसा।

बाबा अवतार सिंह जी मानव को रिश्तों–नातों, धन–दौलतों की नश्वरता को ध्यान में रखते हुए इनका सावधानीपूर्वक प्रयोग करते हुए सद्गुरु–निरंकार की तरफ ध्यान लगाये रखने की प्रेरणा दे रहे हैं।

हरदेव बाणी सार

हे सर्वज्ञ कोई भी तेरा पा नहीं सकता पार है।
छोटी सी बुद्धि मानव की विशाल तू निरंकार है।

बहुत कठिन है एक जुबां से महिमा तेरी गा पाना।
विशाल तेरी विशालता को शब्दों में सुना पाना।

रसना से गुणगान तुम्हारा पल छिन बारम्बार हो।
कहे 'हरदेव' रोम रोम से तू ही तू ही निरंकार हो।

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

★ ज्ञान उजाला है और अज्ञान अंधकार।

★ मानव प्रभु की उत्तम रचना है। इसका रूतबा बनाये रखना।

★ चरित्र की सम्पत्ति सारी दुनिया की दौलत से बढ़कर है।

★ मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।

★ गुरुजन रास्ता दिखाते हैं, चलना आपको स्वयं पड़ता है।

★ परमात्मा का साक्षात्कार करना (ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना) ही मानव का परम लक्ष्य होना चाहिए।

★ आज इन्सान सत्य की तरफ नहीं, झूठ की तरफ जाग्रत है इसका मानवता की ओर जागृत होना बहुत जरूरी है।

★ दूसरों को भला–बुरा कहने से पहले जरा हम अपने–आपको अच्छी तरह से समझ लें कि हम कितने भले और अच्छे हैं।

★ एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है, इसलिए उसका हर हालात में सम्मान करना चाहिए।

★ सोने का प्रत्येक धागा मूल्यवान होता है। उसी प्रकार समय का प्रत्येक क्षण भी मूल्यवान होता है।

★ तलवार के जख्म भर जाते हैं परन्तु जुबान के द्वारा कहे गये वचन दिलों को छलनी कर देते हैं।

★ महापुरुषों की शिक्षाओं को हम जीवन में अपनाएं तो हमारे विचार सुन्दर बनेंगे तब हम सुख और प्रसन्नता महसूस करेंगे।

★ सत्य से कमाया गया धन हर प्रकार से सुख देता है। छल व कपट से कमाया धन दुख ही दुख देता है।

★ काश! संसार के सभी इन्सानों को मिलजुल कर रहने का सलीका प्राप्त हो जाये।

★ संसार में घृणा से अधिक शक्तिशाली प्रेम और क्षमा ही है।

★ परमात्मा को रिझाना तभी सम्भव है, जब हम इन्सानों को भी अपनाएं।

★ जिसमें दास भावना है, धर्म के क्षेत्र में वही ऊँचा माना जा सकता है।

★ अभिमान जूते में कंकर की तरह होता है जो दुःख ही देता है।

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

★ सत्संग से सकारात्मक भावों का जन्म होता है।

★ विश्वास आपको आधी विजय दिलाता है परन्तु विश्वास जब आपकी वाणी और कर्म से व्यक्त होता है तब आप एक अच्छे भक्त बनते हैं।

★ हमने अगर अच्छा इन्सान बनना है तो अपने लिए बनना है। भले ही दुनिया के किसी भी कोने में रहें शान्तिपूर्वक और सह–अस्तित्व के साथ रहें। परस्पर सद्भाव के साथ, एक–दूसरे के काम आते रहें। हमेशा प्रभु–परमात्मा से, ब्रह्मज्ञान से जुड़कर रहें।

★ जहाँ विश्वास, भक्ति और समर्पित भाव एक भक्त का गहना होता है वहीं भक्ति का एक अहम् हिस्सा चेतना भी है।

★ सन्त (भक्त) जानता है कि उसने अपनी जिन्दगी में किस बात को अपनाना है और किस बात को छोड़ देना है।

★ बुद्धिमत्ता नित्य नई बातों को सीखने में है। साथ ही बुद्धिमत्ता इसमें है कि कुछ गलत बातों को त्यागा भी जाए।

★ महापुरुष जानते हैं कि ब्रह्मज्ञान के साथ हमने जुड़ना है तो इस निरंकार के लिए जुड़ना है।

★ सन्त जहाँ भी जाते हैं, अपनी भक्ति और भक्ति की महक साथ लेकर जाते हैं। उस महक से सारे संसार को महका देते हैं। अपने ज्ञान (सद्गुरु) की शिक्षाएं जगह–जगह बांटते हैं।

★ कुछ लोग अच्छे स्थानों की तलाश में होते हैं लेकिन कुछ अन्य ऐसे भी होते हैं जो स्थानों को सुन्दर (अच्छा) बना देते हैं।

★ शांति और प्रेम का सन्देश हम दुनिया को तभी पहुँचा पाएंगे जब हम विनम्रता को अपनायेंगे।

★ ऊँचा उड़ने के लिए पक्षियों को पंखों की आवश्यकता होती है परन्तु इन्सान जितना विनम्र होता है, जितना विनम्रता के साथ जीता है, उतना ही ऊँचाईयों की तरफ जाता है।

संग्रहकर्ता : श्रीराम प्रजापति

दो बाल कविताएं :
हरजीत निषाद

गणतंत्र दिवस
त्योहार महान

गणतंत्र दिवस त्योहार महान,
सबको देता अधिकार समान।
छब्बीस जनवरी उन्नीस सौ पचास,
लागू देश में हुआ संविधान।

नई दिल्ली में जनपथ पर,
तीनों सेनाएं सज–धज कर।
परेड करती हैं शानदार,
गणतंत्र दिवस के अवसर पर।

कला विज्ञान की झांकियां आतीं,
सबका ही ये मन लुभातीं।
देखकर प्रगति भारत की,
खुशियां न मन में समातीं।

पर्व भारत का ये न्यारा,
देखता है जग नजारा।
अतिथि राष्ट्राध्यक्ष आते,
राष्ट्र ध्वज लहराए प्यारा।

नया वर्ष आया

नया वर्ष आया,
नई खुशी लाया।
धरती पर सभी का,
मन हर्षाया।

रूह मुस्कुराई,
दिल से बधाई।
मुख पे हँसी हो,
न हो रुसवाई।

दुःख न कहीं हो,
सुख हर कहीं हो।
रहमत का आसमान,
सुखी ये जमीं हो।

तन मन की खुशियां,
वैभव की बस्तियां।
नववर्ष शुभ हो,
रोशन हो गलियां।

प्रेरक–प्रसंग : दिनेश दर्पण

आम और बाँस

बाँसों के झुरमुट के पास ही एक आम का पेड़ था। बाँस ऊँचा था लेकिन आम का पेड़ बाँस की अपेक्षा कद में छोटा था। एक दिन बाँस ने आम से कहा– देख नहीं रहे हो मैं कितना बड़ा हो चला हूँ और कितनी तेजी से बढ़ रहा हूँ। एक तुम हो जो इतनी आयु होने पर भी अब भी छोटे के छोटे ही हो।

बाँस की वृद्धि और सौभाग्य की आम ने सराहना की पर उसने अपनी स्थिति पर भी अफसोस या असंतोष प्रकट नहीं किया।

समय अपनी गति से बीतता रहा। स्थिति में परिवर्तन आया, बाँस पककर सूख चला किन्तु हरे–भरे आम की डालियां फलों से लदी और फलों से लदने के कारण वह पहले से और अधिक झुक गईं। यह देखकर बाँस एक बार फिर से इठलाया और बोला– देखते हो मैं कितना सुनहरा हो गया हूँ और बिना पत्तियों के भी दूर–दूर से कितना सुनहरा दिखता हूँ। एक तुम हो जिसे फलों से लदा होने के कारण नीचे झुकना पड़ रहा है।

बाँस की जली–कटी बातें सुनकर भी आम ने अपने स्वयं के बारे में कुछ भी नहीं कहा बल्कि बाँस की ही प्रशंसा की। कुछ समय बाद वहाँ एक यात्रियों का झुण्ड (समूह) आया। जिन्हें वहाँ ठहरने के लिए एक आश्रय की तलाश थी। अतः उन्हें रात में ठहरने के लिए आम का पेड़ पसन्द आ गया। उन्होंने उसी आम के पेड़ के नीचे अपना डेरा डाल दिया।

जब खाना पकाने के लिए उन्हें लकड़ी की जरुरत पड़ी, तो उन्होंने लकड़ी खोजने के लिए इधर–उधर अपने आस–पास नजरें दौड़ाई तो उन्हें अपने पास ही वह बाँस का सूखा और पीला पेड़ नजर आया। उन्होंने उसे फौरन काट लिया और जलाना शुरू कर दिया ताकि खाना पकाया जा सके। अपने आपको जलते हुए देखकर बाँस बड़बड़ाने लगा लेकिन आम के पेड़ को अपने नीचे किसी को आश्रय पाकर सुखी देखकर बड़ा अच्छा लगा और उसे भी किसी की मदद में सहभागी बनकर अपार खुशी और सुख–संतोष महसूस हुआ।

समुद्र में मिल रही हैं अंटार्कटिक ग्लेशियर के नीचे छिपी बड़ी झीलें

वॉशिंगटन। पश्चिमी अंटार्कटिका के किनारे पर सबसे तेजी से बढ़ रहे ग्लेशियरों में से एक के नीचे छिपी बड़ी झीलें अभूतपूर्व दर से बहकर समुद्र में मिल रही हैं।

गर्म समुद्री जल के भीतरी हिस्से में प्रवेश के कारण 'ठवैट्स ग्लेशियर' बहुत तेजी से सागर की ओर बह रहा है। इस घटनाक्रम के विवरण से वैश्विक समुद्र स्तर में दो फुट तक का इजाफा होने की संभावना के बारे में जानकारी मिल सकती है। साथ ही वेस्ट अंटार्कटिक आइस शीट की अस्थिरता से जुड़ा विवरण भी मिल सकता है। इस अध्ययन का प्रकाशन 'कायरोस्फेयर जर्नल' में हुआ है। (भाषा)

मंगल पर दो अरब साल पुराने ज्वालामुखी की गतिविधियां पता चलीं

ह्यूस्टन। वैज्ञानिकों ने लाल ग्रह यानी मंगल पर कम से कम दो अरब साल पुराने ज्वालामुखी की गतिविधियों का पता लगाया है। यह जानकारी मंगल ग्रह के एक उल्कापिंड के विश्लेषण से हासिल हुई है।

इस खोज से इस बात की पुष्टि होती है कि सौरमंडल में सबसे लम्बे समय तक सक्रिय रहने वाले कुछ ज्वालामुखी इस ग्रह पर हो सकते हैं।

शील्ड ज्वालामुखी और इससे निकलने वाले लावा से लम्बी दूरी तक लावा मैदानों का निर्माण होता है। यह निर्माण पृथ्वी के हवाई द्वीप की संरचना जैसा ही है। मंगल ग्रह का सबसे बड़ा ज्वालामुखी 'ओलंपस मून' है, जो करीब 27.3 किलोमीटर ऊँचा है। इसकी ऊँचाई पृथ्वी के हवाई स्थित सबसे ऊँचे ज्वालामुखी 'मौना की' से लगभग तीन गुना है। 'मौना की' की ऊँचाई 10 किलोमीटर है। अमेरिका में 'ह्यूस्टन विश्वविद्यालय' के प्रोफेसर टॉम लापेन ने बताया कि इस अध्ययन से ग्रह के विकसित होने के नये सुराग और मंगल पर ज्वालामुखी गतिविधि के इतिहास का पता चला है। मंगल ग्रह पर स्थित ज्वालामुखी के पत्थरों के घटक का पता हमें अभी तक पृथ्वी पर मिले उल्कापिंडों से ही चला है। यह अध्ययन 'जर्नल साइंसएडवांस' में प्रकाशित हुआ है। (भाषा)

—संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज की उपस्थिति में दिल्ली में हुए अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन (समागम) में हँसती दुनिया परिवार के सदस्यों ने सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों द्वारा गुरुवंदना की।

गुरुवंदना

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

जंगल में एक पीपल का पेड़ था और उसके पास ही एक बाँस का पेड़ भी था। पीपल का पेड़ बहुत मजबूत था। उसकी शाखाएँ चारों और फैली हुई थीं। इसके विपरीत बाँस का पेड़ एकदम पतला-सा था। जिस दिशा में हवा चलती थी वह बाँस का पेड़ उस ओर झुक जाता था।

तुम तो बड़े आज्ञाकारी हो। तुम हवा की दिशा तथा गति के अनुसार ही हिलते-डुलते रहते हो? तुम भी मेरी तरह सीधे खड़े रहा करो। हवा से कह दो कि तुम उसकी आज्ञानुसार नहीं चलोगे।

पीपल की बातें सुनकर बाँस चुपचाप खड़ा रहा।

क्या तुमने मेरी बात नहीं सुनी? तुम मेरी बातों का जवाब क्यों नहीं देते?

इसमें मैं क्या कर सकता हूँ? तुम तो मुझसे बहुत अधिक मजबूत हो। मैं तो बहुत कमज़ोर हूँ।
अगर हवा बहुत तेज़ गति से चलने लगे तो यह नुकसानदायक सिद्ध हो सकती है। हमें हवा की ताकत का सम्मान करना चाहिए नहीं तो...
बाँस का पेड़ अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था, तभी पीपल का पेड़ बोल पड़ा ...
किसी भी प्रकार की हवा मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। मुझमें बहुत बल है। मेरी जड़े दूर-दूर तक फैली है, मैं कभी नहीं गिर सकता।

उस समय मंद-मंद चल रही हवा ने पीपल और बाँस के बीच चल रही बात को सुन लिया।

हवा क्रोधित हो गई और पीपल के पेड़ से टकराकर आगे निकल गई कुछ देर बाद हवा और तेज़ गति से आई और तूफ़ान बन गई। तूफ़ानी हवा के कारण बाँस का पेड़ झुक गया।

तूफ़ानी हवा पीपल के पेड़ से जाकर टकराई, लेकिन पीपल का पेड़ ज्यों का त्यों ही खड़ा रहा।

हवा ने फिर से अपनी गति को तेज़ किया और जाकर जड़ो से टकराई। इस टक्कर से जड़े कमजोर हो गई।

पेड़ की जड़ों ने तूफ़ानी हवा से गिरने से रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन तेज़ हवा के कारण जड़ें पेड़ को गिरने से रोक न पाई और पेड़ धराशायी हो गया।

पीपल के पेड़ का यह हाल देखकर बाँस का पेड़ दुखी मन से सोचने लगा...
आखिरकार पीपल के पेड़ का अन्त हो ही गया। काश! उसने मेरा कहा माना होता और हवा का सम्मान किया होता।
शिक्षा: अहंकार सबसे बड़ा शत्रु होता है। अत: अहंकार से हर हाल में बचना चाहिए।

जानकारी : फेनम सोगानी

बर्फीले खेल के मैदानों की शुरुआत

आपको जानकर थोड़ा ताज्जुब होगा– कुछ मुल्क ऐसे भी हैं जहाँ 'हॉकी' और 'वॉलीबॉल' जैसे खेलों के खेलने का आनन्द बर्फीले मैदानों पर लिया जाता है। जिन देशों में बर्फ अधिक गिरती है वहाँ तो ये मैदान प्राकृतिक रूप से बन जाते हैं लेकिन जहाँ बर्फ कम गिरती है या गिरती ही नहीं, वहाँ इन मैदानों को 'कृत्रिम बर्फ' से तैयार किया जाता है।

इन खेलों के लिए संसार में पहली बार 'बर्फीले मैदान' बनाने का विचार 'लेस्टर'और 'पैट्रिक' नाम के दो बन्धुओं के मन में आया था। अपनी कल्पना के अनुरूप ही इन बन्धुओं ने आज से 100 वर्ष पूर्व कनाडा के विक्टोरिया शहर मे पहला इनडोर बर्फीला मैदान बनाया था। उन दिनों इस अनोखे मैदान के निर्माण में करीब सवा लाख डालर का खर्च आया था, इसमें तकरीबन चार हजार दर्शक आसानी से बैठ सकते थे।

इसके बाद इन बन्धुओं ने कनाडा में पहले से बड़ा 'बर्फीला मैदान' बनाया। जिसके निर्माण में करीब सवा दो लाख डालर का खर्च आया था, इसमें लगभग दस हजार दर्शक बैठकर खेल के नजारे देख सकते थे। इन बन्धुओं ने चार दशक के सफर में 1500 से भी अधिक बर्फीले खेल मैदानों का निर्माण किया था।

वैसे बर्फीले खेलों की शुरुआत 'विंटर ओलंपिक' के रूप में उत्तरी यूरोप में हुई थी लेकिन उस जमाने में खेलों के लिए बर्फीले मैदानों का निर्माण सलीके पूर्ण ढंग से नहीं किया जाता था बल्कि इन खेलों का आयोजन ऐसे समय में किया जाता था, जब उत्तरी यूरोप में चारों ओर बर्फ ही बर्फ नजर आती थी। इस बर्फीली चादर पर ही खेल खेलने का आनन्द लिया जाता था।

एक बर्फीले खेल के मैदान में 12 से 25 बर्फ की परतें एक के बाद एक चढ़ाई जाती हैं। इनमें कुछ परतें एक इंच के 32वें भाग के बराबर पतली होती हैं। इन्हें बनाने में कई आधुनिक तकनीकों का सहारा लिया जाता है।

रोचक बालकथा : कमल सोगानी

झटकू का घमण्ड

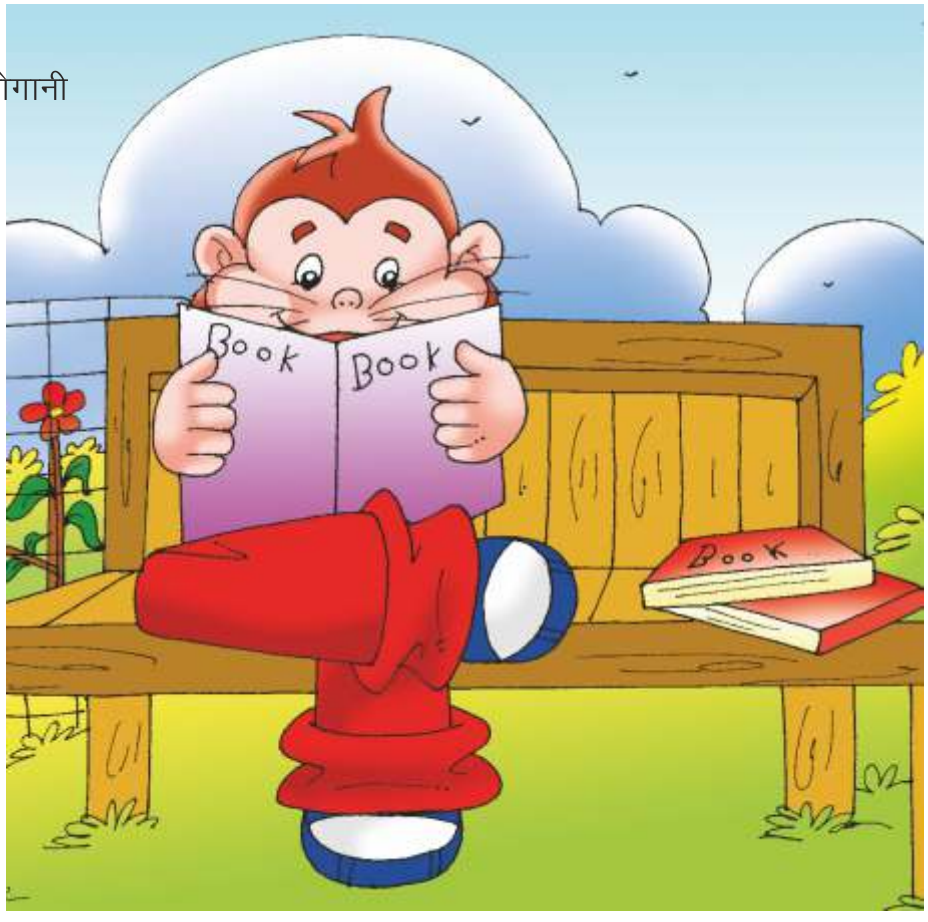

झटकू बन्दर अपने आपको बड़ा अक्लमंद और होशियार समझता था। जंगल के प्राणियों से वह कभी सीधे मुँह बात नहीं करता। अनपढ़ प्राणियों के सम्मुख वह अंग्रेजी की पत्र–पत्रिकाएं हाथ में लेकर घूमा करता। कई मर्तबा सार्वजनिक पार्क में बड़े ध्यान से अंग्रेजी पुस्तकों का अध्ययन किया करता।

उसे जंगल के प्राणी सचमुच ही पढ़ा–लिखा व महान समझते थे। जबकि हकीकत तो यह थी वह पढ़ा–लिखा ज्यादा नहीं था बस थोड़ा बहुत लिखना जानता था। लेकिन इस बात की खबर उसके अलावा किसी को नहीं थी।

जंगल के प्राणियों की लिखावट की वह अक्सर हँसी उड़ाया करता और कहता ऐसे फूहड़ शब्द तो मैं पढ़ना भी पसन्द नहीं करता।

हाँ, झटकू जब भी अंग्रेजी की पत्र–पत्रिकाएं जंगल के प्राणियों के सम्मुख ले जाता, तब वह उन्हें पढ़ता कैसे क्योंकि उसे अंग्रेजी पढ़ना तो आता नहीं था। बस वैसे ही उनमें छपी रंगीन तस्वीरों को निहारा करता।

जब भी जंगल में कोई समारोह होता तो झटकू को आदर के साथ बुलाया जाता। लेकिन वह किसी भी समारोह में भाग लेने नहीं जाता। वह जानता था कि वहाँ मुझसे लिखने–पढ़ने व बोलने की बात कहेंगे और इस क्षेत्र में वह अपने को काफी कमजोर समझता था। जब–जब भी जंगल में प्रोग्राम होते वह इधर–उधर लुक–छुप जाया करता हमेशा कोई न कोई नया बहाना बना दिया करता।

एक दिन मटकू लोमड़ी ने झटकू की सच्चाई का पता अपनी गुप्त जासूसी से लगाया। उसने जंगल के तमाम प्राणियों को पोस्ट ऑफिस के आस–पास छिपने को कहा।

रोज की तरह उस दिन भी झटकू पोस्ट ऑफिस की खिड़की पर पहुँचा और डाक

सामग्री खरीदने लगा। तभी मटकू लोमड़ी वहाँ आई। पोस्ट कार्ड खरीदकर बोली– झटकू जी जरा इस पर पता लिख दीजिये।

झटकू ने जैसे–तैसे लिख दिया।

''धन्यवाद, अब जरा इस पर मेरी खैरियत के दो शब्द भी लिख दें।''

झटकू जल्दी में झल्ला गया लेकिन लिख दिया, लिखने के बाद कुछ तीखे स्वर में बोला– ''और कुछ...''

मटकू ने एक नजर पोस्टकार्ड पर लिखे अक्षरों को निहारा, बोली– सिर्फ एक लाइन और बढ़ा दें कि गन्दी और फूहड़ लिखाई के लिये माफ कर दें।

फिर वह पोस्टकार्ड जल्दी से झटकू के हाथों से छीनकर तेजी से दौड़ी, तभी आस–पास छिपे जंगल के प्राणी निकल आये। उन्होंने जब पोस्टकार्ड पर झटकू के लिखे अक्षर देखे तो खूब व्यंग्य कसे।

सुनकर बन्दर बुरी तरह झेंप गया। बस, उसी दिन से उसने जंगल के प्राणियों के बीच हाथ जोड़कर कहा– ''मैं भी आप लोगों की तरह ही कम पढ़ा–लिखा हूँ। मैं व्यर्थ का ही दिखावा किया करता था लेकिन यह सच है कि झूठ की पोल एक दिन जरूर खुलती है।''

अब वह जंगल के जानवरों के बीच सीधे मुँह बात करने लगा, क्योंकि उसका दिखावे का झूठा घमण्ड टूट चुका था।

कविता : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

नए वर्ष में

आओ नव संकल्प सजाएं,
काम अधूरे हैं जो अपने–
नए वर्ष में कर दिखलाएं।

हमें देश को एक बनाना,
घर–आंगन खुशियां पहुँचाना।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,
सबको अपने गले लगाना।
चलो एकता की बंसी पर–
मेल–जोल का गीत सुनाएं।

सबको शिक्षा मिले बराबर,
रहे न कोई अनपढ़ निरक्षर।
सबके मन में ज्ञान ज्योति का,
बहे अनोखा झर–झर निर्झर।
हिंसा या आतंकवाद पर–
प्रेम, शांति का लेप लगाएं।

मन के पक्के तन के कच्चे,
हम भारत माता के बच्चे।
ज्ञान और विज्ञान हमें प्रिय,
हम हैं अच्छे सीधे सच्चे।
नए वर्ष पर नव संकल्पों–
का सबको संदेश सुनाएं।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

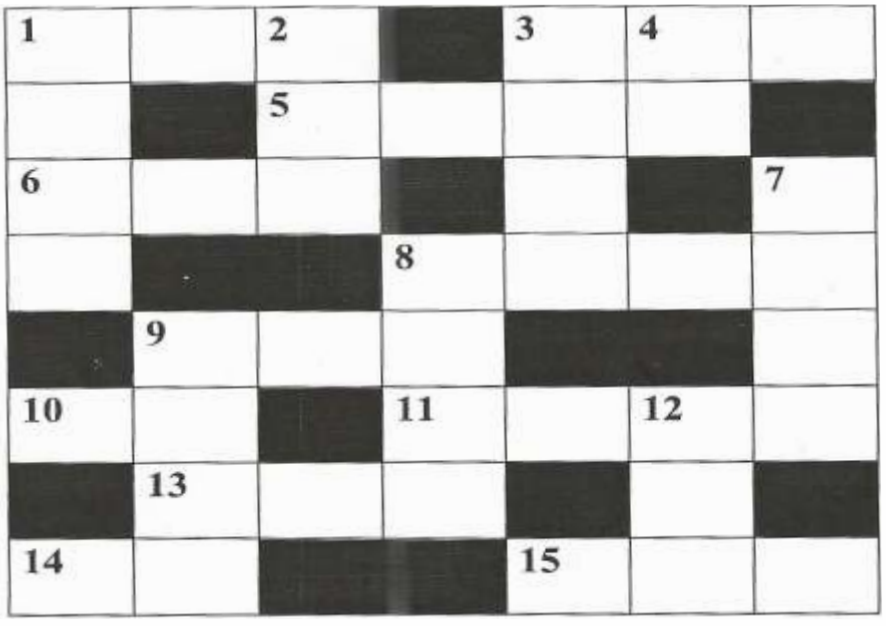

बाएं से दाएं

1. मिस्र और नाईजीरिया देश .... महाद्वीप में स्थित हैं।
3. रामचरितमानस में अयोध्या कांड के बाद .... कांड आता है।
5. संसार का सबसे छोटा देश .... सिटी है।
6. .... क्लिंटन को हराकर डोनाल्ड ट्रंप अमरीका के 45वें राष्ट्रपति बने।
8. .... की तरह रंग बदलना यानि किसी बात पर स्थिर न रहना।
9. सन् 2002 से 2007 के दौरान भारत के राष्ट्रपति ए. पी.जे. .... कलाम थे।
10. पहली समसंख्या और पहली विषमसंख्या का योग।
11. उत्तराखंड राज्य का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल जहाँ 'हर की पौड़ी' स्थित है।
13. पान में डालकर खाया जाने वाला एक सख्त पदार्थ।
14. क्रिकेट खिलाड़ी महेन्द्र सिंह .... को 'माही' के नाम से भी जाना जाता है।
15. 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' .... नवम्बर को मनाया जाता है।

ऊपर से नीचे

1. अमरीका के 16वें राष्ट्रपति .... लिंकन थे।
2. तमिलनाडु राज्य का तिरुचिरापल्ली शहर जिस नदी के किनारे पर स्थित है।
3. बीरबल मुगल सम्राट .... के दरबार का मंत्री था।
4. गोल और रन में से जो शब्द क्रिकेट से सम्बन्धित है।
7. जर्मनी का एक तानाशाह शासक।
8. इस पंक्ति में छुपे एक जन्तु को ढूंढिए : प्रकाश गिल हरी मिर्च खाना पसन्द करते हैं।
9. सुनी .... करना यानि किसी बात को सुनकर भी उस पर ध्यान न देना।
12. भगवान श्रीकृष्ण .... युग में हुए थे।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

प्रस्तुति : राधेलाल 'नवचक्र'

जन्मभूमि से प्यार

किसी हवाई अड्डे पर एक ही जगह हेलिकाप्टर और हवाई जहाज खड़े हुए थे। दोनों से कुछ ही दूरी पर एक मोटरकार भी खड़ी थी।

हेलिकाप्टर ने हवाई जहाज से कहा, ''भाई मैं अपने देश की जितनी भी बड़ाई करूं, कम ही होगी। सचमुच बहुत खूबसूरत है हमारा देश।''

''क्या नाम है, तुम्हारे देश का?'' हवाई जहाज ने जानना चाहा।

''फ्रांस'', गर्व से हेलिकाप्टर बोला, ''वहीं मेरा जन्म हुआ है।''

''भाई, मुझे भी अपना देश पसंद है– खूब। हर सुख–सुविधा वहाँ उपलब्ध है।'' हवाई जहाज ने अपनी बात बतायी।

''कहाँ है तुम्हारा देश?'' हेलिकाप्टर ने उत्सुकता दिखाई।

''अमेरिका'', जवाब देते हुए हवाई जहाज ने आगे कहा, ''जो हमारी प्यारी जन्मभूमि है।''

दोनों की बातें सुनकर मोटरकार चुप नहीं रह सकी। पूछ बैठी, ''अगर अगला जन्म तुम दोनों को अपनी पसंद से लेना पड़े तो तुम दोनों कहाँ जन्म लेना पसंद करोगे?''

इस सवाल पर दोनों कुछ देर सोचने लगे। फिर हेलिकाप्टर बोला, ''मैं अमेरिका में जन्म लेना चाहूंगा।''

''और मैं फ्रांस में,'' यह हवाई जहाज का स्वर था।

दोनों की बातें सुनकर मोटरकार क्षण भर रहस्यमय ढंग से मुस्करायी। फिर तपाक से बोली, ''मैं जर्मनी में जन्मी हूँ और जितनी भी बार मुझे जन्म लेना पड़े मैं जर्मनी में ही जन्म लेना पसंद करूंगी।''

''ऐसा क्यों?'' दोनों चौंक उठे।

''मुझे अपनी जन्मभूमि सारी दुनिया से ही नहीं, अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी है, चाहे वह जैसी भी है।'' मोटरकार ने दोनों को दो टूक जवाब दिया, ''और हाँ, इस वक्त तुम दोनों हमारे ही देश के हवाई अड्डे पर खड़ें हों। यही है हमारा देश–मेरी जन्मभूमि।''

अपनी जन्मभूमि के प्रति मोटरकार का सच्चा अटूट प्यार देखकर दोनों लज्जित हो उठे।

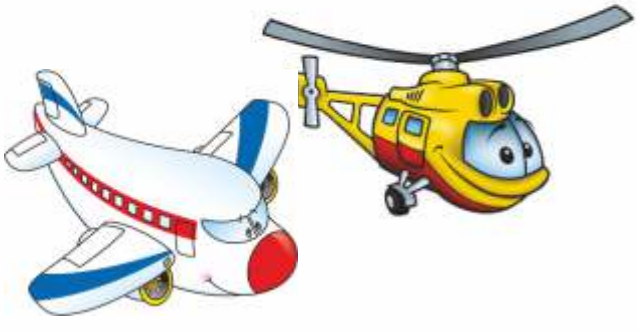

जानकारी : डॉ. विनोद गुप्ता

कोमोडो ड्रैगन

कोमोडो ड्रैगन डायनासोर परिवार का एकमात्र जीविन सदस्य है। इंडोनेशिया में पाए जाने वाले इन सरीसृपों को वहाँ की भाषा में 'ओरा' कहा जाता है। वैसे इनका जीवशास्त्रीय नाम वेरेलस कोमोडीनसिम है। दिखने में ये काफी डरावने लगते हैं।

इंडोनेशिया के कोमोडो, रिंका, पाडार और फ्लोरेस द्वीपों में पाए जाने वाला कोमोडो मॉनिटर छिपकली जाति के जीवों में सबसे दीर्घकाय है। इस जाति के वयस्क नरों की औसत लम्बाई सात से आठ फुट तथा वजन 60 किलोग्राम तक हाता है। वैसे इस जाति के नमूने की लम्बाई 30 फूट तक बताई गई है। ठीक तरह से नापने पर इसका एक नमूना 10 फुट 8 इंच निकला जोकि बीमा के सुल्तान द्वारा एक अमेरिकी प्राणी वैज्ञानिक को भेंट स्वरूप दिया गया था। सन् 1937 में इसे थोड़े समय के लिए अमेरिका के सेंट लुई जुआलॉजिकल गार्डन में प्रदर्शित किया गया था। उस वक्त उसकी लम्बाई 10 फुट 2 इंच तथा वजन 166 किलोग्राम था।

कोमोडो ड्रैगन की जीभ दो भागों में बंटी होती है। जब यह अपनी जीभ को अंदर–बाहर कर पूंछ फटकारता है तो अच्छे–अच्छों के पसीने छूट जाते हैं। ये पैरों के बल रेंगकर चलते हैं। अपने वजन के कारण ये पेड़ों पर चढ़ नहीं पाते।

इनकी घ्राण शक्ति बड़ी तेज होती है जो इनके शिकार करने में बड़ी मददगार साबित होती है। बड़े कोमोडो ड्रैगन हिरण, भैंस, जंगली सुअर, घोड़े आदि को अपना शिकार बनाते हैं। पहले ये अपने शिकार को काटकर जख्मी कर देते हैं। इनकी लार में व्याप्त जहर शिकार को अधमरा कर देता है। इसके बाद रक्त की गंध के सहारे ये अपने शिकार तक पहुँच जाते हैं। ये तीन किलोमीटर दूर से ही रक्त की गंध पहचान लेते हैं।

बाल कविता : डॉ. हरीश निगम

सर्दी

लेकर कोट–रजाई सर्दी,
मौसम के घर आई सर्दी।

आफत जैसी लगी किसी को,
और किसी को भाई सर्दी।

छाते, छतरी, रेनकोट की,
करने लगी बिदाई सर्दी।

घर–घर जा के महिलाओं को,
बांटे ऊन–सलाई सर्दी।

चाहे कुछ भी लोग कहें पर,
सब के ऊपर छाई सर्दी।

कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

जाड़ा राम

आओ मिस्टर जाड़ाराम,
दो खुशहाली का पैगाम।
नरम गुलाबी धूप सुहाती,
छाँव नहीं देती आराम।

उनको बिल्कुल नहीं सताना,
जो करते मेहनत से काम।
जो बच्चे आलस करते हैं,
उन्हें डराना सुबह–ओ–शाम।

गर्म समोसों की रुत आई,
गर्म चाय से अब है काम।
हीटर अलाव कंबल से होगा,
सर्दी जी का काम तमाम।

जो करते हैं रोज व्यायाम,
खेलते–कूदते सुबह शाम।
उनकी सेहत खूब बनाने,
आओ मिस्टर जाड़ाराम।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

ईर्ष्यालु गबरू लोमड़

नदी किनारे का नंदनवन कई हिस्सों में बंटा हुआ था। हर हिस्से में अलग–अलग तरह के जानवरों की बस्ती थी। जंगल के मध्य ही 'जंगल विद्यालय' था। वहाँ सभी जानवरों के बच्चे पढ़ने आते थे।

गबरू लोमड़, चीकू खरगोश, रोमी बंदरिया, जीतू जिराफ, कालू भालू, जंबू हाथी और काली बकरी सभी कक्षा आठ के छात्र थे। जीतू जिराफ और जंबू हाथी में गहरी मित्रता थी। गबरू लोमड़ पिछले वर्ष आठवीं का ही छात्र था। वह फेल हो गया था।

जीतू जिराफ और जंबू हाथी की दोस्ती से गबरू लोमड़ बहुत चिढ़ता था। वह हमेशा इसी कोशिश में लगा रहता कि दोनों में किस प्रकार लड़ाई करवाई जाए।

एक दिन आधी छुट्टी के समय गबरू को मौका मिल ही गया। जीतू जिराफ की गणित की पुस्तक गबरू लोमड़ ने जंबू हाथी के बैग में रख दी। जीतू और जंबू को इसकी खबर भी नहीं लगी। यह हरकत करते हुए गबरू को रोमी बंदरिया और काली बकरी ने देख लिया। मगर दोनों चुप रहीं।

अगले दिन जंबू स्कूल नहीं आ पाया था। उसके पिताजी की तबीयत अचानक खराब हो गई थी। वह पिताजी को जंगल के प्रसिद्ध डॉक्टर गेंडामल के अस्पताल में दिखाने ले गया था।

जीतू जिराफ ने स्कूल आते ही अपनी पुस्तक ढूंढनी शुरू कर दी। वह बेहद

परेशान हुआ जा रहा था। गबरू लोमड़ मन ही मन प्रसन्न होता हुआ उसकी मनोदशा को परख रहा था। वह धीरे से जीतू के कान में फुसफुसाकर बोला, ''जीतू मैं जानता हूँ तुम्हारी पुस्तक किसके पास है?''

''किसके पास है, गबरू? प्लीज बताओ, मैं सर से कहकर आज उसकी ऐसी मरम्मत करवाऊँगा कि सात जन्म तक याद रखेगा।'' जीतू गुस्से से बोला।

''जंबू हाथी के पास।'' गबरू लोमड़ ने कहा।

''क्या...? जंबू के पास। लेकिन वो ऐसा नहीं कर सकता।''

''लेकिन उसने ऐसा किया है। मैंने अपनी आँखों से उसको तुम्हारी पुस्तक चुराते हुए देखा है। इसीलिए तो वो आज स्कूल भी नहीं आया।'' गबरू लोमड़ जीतू को भड़काता हुआ बोला।

दूसरे दिन जंबू हाथी जैसे ही स्कूल आया, जीतू जिराफ उसे खरी–खोटी सुनाने लगा– जंबू, मैं नहीं जानता था कि तुम चोर भी हो। तुमने मित्रता को कलंकित किया है। आज से हमारा–तुम्हारा रास्ता एकदम अलग–अलग है। मैं चोरों से दोस्ती नहीं करता।

''लेकिन जीतू, मेरी बात तो सुनो। मैं चोर नहीं हूँ। मेरे पिताजी की तबीयत खराब थी इसीलिए...''

''तुम झूठ बोल रहे हो, तुम चोर हो...''

''नहीं, मैं चोर नहीं हूँ...'' कहते हुए जीतू जिराफ ने जंबू को एक घूंसा जमा दिया। गबरू लोमड़ मन ही मन खुश हो उठा।

तभी गुरुजी भोलू बंदर ने कक्षा में प्रवेश किया, उन्होंने पूरी बात पूछी, गबरू ने बताया कि उसने स्वयं जंबू को पुस्तक चुराते हुए देखा था।

अभी जीतू जिराफ व जंबू हाथी की लड़ाई चल रही थी कि रोमी बंदरिया जोर–जोर से चिल्लाने लगी, ''हाय राम, मेरी अंग्रेजी और भूगोल की पुस्तकें किसी ने चुरा ली।''

''मैं बताती हूँ...'' काली बकरी ने कहा, ''तुम्हारी पुस्तकें गबरू लोमड़ ने चोरी की है।''

''म्मैंने किसी की पुस्तकें नहीं चुराई। मेरा बैग देख सकते हैं सर'' कहते हुए जैसे ही गबरू ने बैग पलटा, दोनों पुस्तकें भी अन्य पुस्तकों के साथ बाहर निकल पड़ी। गबरू लोमड़ की हालत देखने जैसी थी।

''गबरू, तुम कक्षा से बाहर निकल जाओ।'' गुरुजी भोलू बंदर ने गुस्से से कहा।

''नहीं सर, मैंने रोमी बंदरिया की पुस्तकें नहीं चुराई। किसी ने मेरे बैग में रख दी होगी।''

''नहीं सर मैंने देखा है गबरू को पुस्तकें चुराते हुए।'' काली बकरी बोली।

''काली झूठ बोल रही है, मैं चोर नहीं हूँ, सर।'' गबरू रूआंसा होकर बोला।

गुरुजी ने अपना डण्डा हवा में घुमाते हुए कहा, ''गबरू अगर तुम चोर नहीं हो तो फिर जंबू चोर कैसे हो गया। उसके बैग में तुमने ही तो जीतू की गणित की पुस्तक रखी थी बोलो, जवाब दो।''

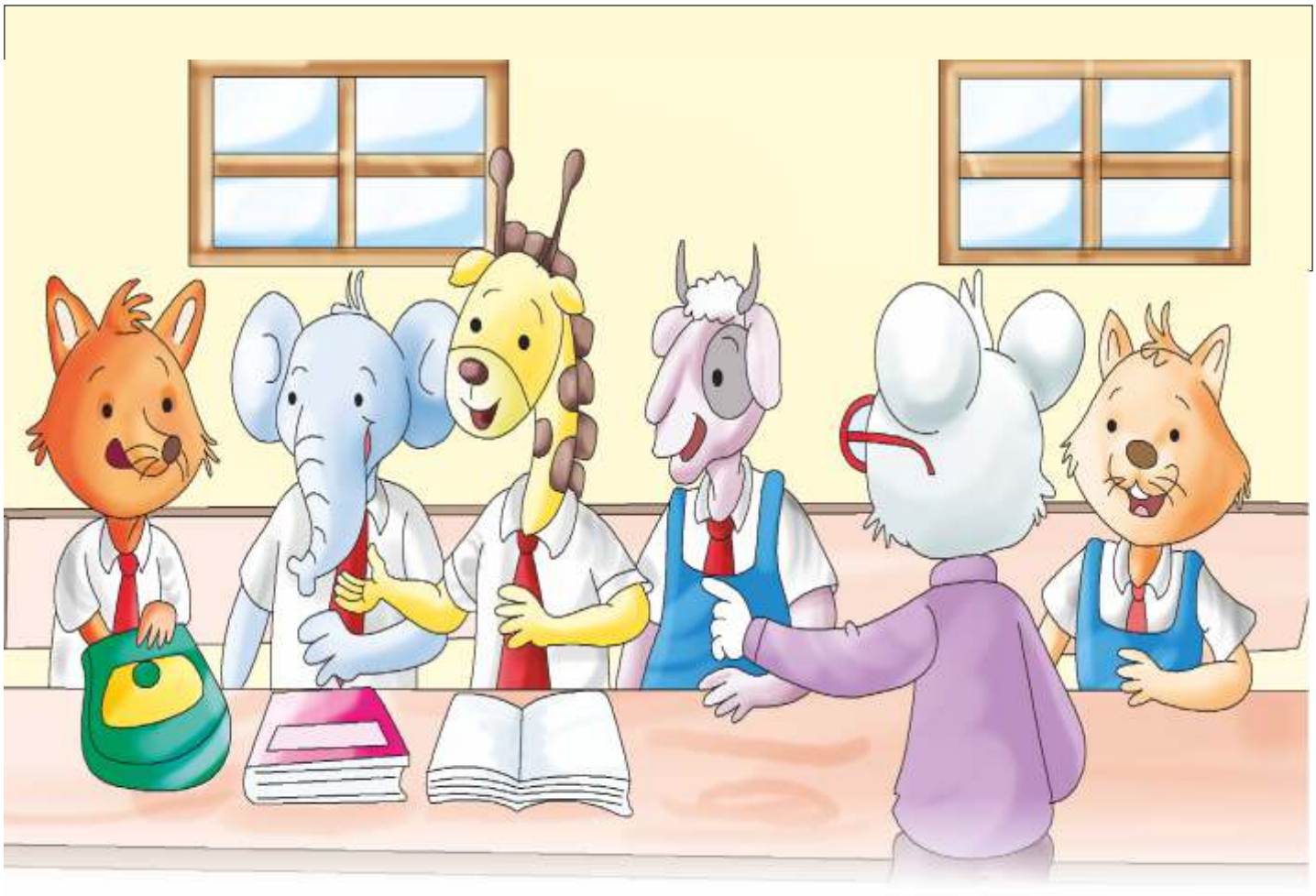

गबरू पोल खुल जाने के डर से थर–थर कांपने लगा।

''गबरू, रोमी बंदरिया और काली बकरी ने पहले ही मुझे बता दिया था कि तुमने जंबू के बैग में जीतू की किताब रख दी है क्योंकि जंबू और जीतू की दोस्ती से तुम ईर्ष्या करते हो। तुम्हें सबक सिखाने के लिए ही मैंने यह चाल चली। रोमी और काली का सहयोग लिया। बोलो, तुम्हें क्या कहना है?''

''सर, मम्मुझे माफ कर दीजिए।''

''हरगिज नहीं, तुम माफ करने के काबिल नहीं हो, तुम्हें सजा मिलनी ही चाहिये। तुम जीतू और जंबू से माफी मांगोगे। इसके अलावा एक दिन के लिए तुम्हें कक्षा से निकाला जाता है।'' गुरुजी ने कहा।

गबरू रो पड़ा। रोते–रोते ही उसने दोनों से माफी मांगी। फिर वह कक्षा से बाहर निकल गया।

जीतू जिराफ भी जंबू से बोला, ''मुझे माफ करना मेरे दोस्त, बिना सोचे–समझे ही मैंने तुम्हें चोर समझ लिया था।''

दोनों दोस्त फिर गले मिले। उन्होंने रोमी बंदरिया, काली बकरी और गुरुजी को धन्यवाद दिया। उनकी समझदारी से ही गबरू लोमड़ को सबक मिला था और उनकी दोस्ती बच गई थी।

बाल कहानी : किशोर डैनियल

चतुराई और भाग्य

एक राजा था। वह दयालु, धार्मिक एवं न्यायप्रिय प्रवृत्ति का था।

एक बार राजा के शत्रुओं ने राजा को मारने की सोची। उन्होंने लालच देकर राजा के हज्जाम (नाई) को अपनी तरफ मिला लिया। हज्जाम से कहा कि जब वह राजा की हजामत बनायें उस समय उस्तरे से राजा की गर्दन काट दे। इस काम के लिए उसे भारी ईनाम मिलेगा।

दूसरे दिन प्रातः जब वह हज्जाम उस्तरे की धार बना रहा था तो वह मन ही मन बुदबुदा रहा था– 'मारूंगा, खूब पैसा मिलेगा।' यह सब बातें राजा उसके पीछे खड़ा सुन रहा था। हज्जाम ने राजा को पलटकर देखा तो पहले तो वह घबरा गया किन्तु शीघ्र ही उसने चालाकी से बात पलटते हुए राजा से बोला– महाराज! मैं कह रहा था कि जो भी आपके शत्रु हैं उन्हें मारूंगा और आपसे ईनाम लूंगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आपके कुछ दुश्मन कोई चाल चल रहे हैं, मैं उन सबको मार डालूंगा।

हज्जाम की बात सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। अब राजा की नजरों में उसका सम्मान बढ़ गया। चालाकी और होशियारी से वह बच गया।

कुछ दिनों बाद राजा अपने दरबार में बैठा था। हज्जाम घूमते–फिरते दरबार के गेट पर पहुँचा वह अन्दर तो जा नहीं सकता था। अतः वह बाहर द्वार पर खड़ा सोचता रहा और अचानक ही उसने अपना एक हाथ ऊपर की तरफ उठाया। अचानक उसी समय राजा ने उधर देखा तो उस ने समझा कि हज्जाम शत्रुओं की कोई राज की बात बताने उसे इशारे से बुला रहा है। वह उठकर बाहर आ गया। राजा के बाहर आते ही दरबारी भी एक–एक करके बाहर आ गये। उसी समय संयोगवश दरबार की छत गिर पड़ी। सब के सब हैरान थे। राजा भी बड़ा हैरान था कि हज्जाम को इस बात का कैसे पता चला कि छत गिरने वाली है। अपनी तथा दरबारियों की जान बचने के कारण वह प्रसन्न भी बहुत था। उसने हज्जाम को एक बड़ा पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

विशेष लेख : राजकुमार जैन

'देशी काजू' यानी मूंगफली

मूंगफली काजू से सस्ती होती है। लेकिन यह पौष्टिकता से भरपूर है। इसलिए मूंगफली को 'देशी काजू' कहा जाता है। मूंगफली साल के बारहों महीने आसानी से मिल जाती है।

कहा जाता है कि सबसे पहले पुर्तगाली व्यापारी अपने साथ गुलाम नीग्रो कैदियों के आहार के लिए मूंगफली लाए थे। अफ्रीका होती हुई मूंगफली यूरोप तथा अन्य पश्चिमी देशों में पहुँची। 1840 में तिलहनी मांग के रूप में मूंगफली की उपयोगिता काफी बढ़ गई।

आज विश्व के कुल उत्पादन का 40 प्रतिशत से भी अधिक मूंगफली का उत्पादन हमारा देश करता है। दुनियाभर में मूंगफली की अनेक किस्में और प्रजातियां ईजाद की जा चुकी हैं। एक अनुमान के मुताबिक दुनियाभर में कुल दो करोड़ एकड़ से भी अधिक जमीन पर मूंगफली का उत्पादन किया जाता है। वर्तमान में इसका कुल उत्पादन 70 लाख टन से अधिक है। भारत के अलावा चीन, अमेरिका, जापान, मेडागास्कर, अल्जीरिया, अर्जेंटीना आदि देशों में भी बड़े पैमाने पर मूंगफली की उपज होती है।

पौष्टिकता में मूंगफली लाजवाब है। विशेषज्ञों की राय है कि मांस और मज्जा के निर्माण में मूंगफली काफी उपयोगी है। प्रति सौ ग्राम मूंगफली से 550 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। एक पौंड मूंगफली से जितनी ऊर्जा प्राप्त होती है, उतनी एक पौंड मांस से भी नहीं मिलती। इसमें प्रोटीन की मात्रा गेहूं से तकरीबन दोगुनी होती है।

प्रोटीन बनाने वाले निम्न तत्व जिन्हें एमीनो अम्ल कहा जाता है, मूंगफली में निम्नानुसार पाए जाते हैं :–

आर्थानिन 13.6 प्रतिशत, लाइसिन 4.4 प्रतिशत, हिस्टीडीन 2.2 प्रतिशत, ट्रिप्टोफेन 0.7 प्रतिशत, टायरोसिन 4.5 प्रतिशत और सिस्टीन 1.2 प्रतिशत।

जाहिर है कि मूंगफली में प्रोटीन प्रचुर मात्रा में होता है। मूंगफली के रासायनिक विश्लेषण से पता चलता है कि उसमें 40 प्रतिशत वसा और 20 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट होता है। मूंगफली को सूखे मेवों की श्रेणी में रखा जाकर स्वास्थ्य की दृष्टि से इसकी तुलना काजू, बादाम और अखरोट से की जाती है। मूंगफली में लौह, कैल्शियम, फॉस्फेट, विटामिन 'ए' आदि शरीर के विकास के लिए जरूरी सभी तत्व भी बहुतायत से पाये जाते हैं। मूंगफली स्नायविक तन्तुओं को शक्तिशाली और तंदुरुस्त बनाती है।

मूंगफली का तेल हमारे दैनिक जीवन में भोजन का एक अनिवार्य अंग है। मूंगफली के तेल की तुलना उपयोगिता के लिहाज से जैतून के तेल से की गई है। यह तेल शीघ्र और सरलता से पच जाता है। यूनानी और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतियों में मूंगफली के तेल को काफी उपयोगी बताया गया है। क्षय रोगों के लिए यह विशेष फायदेमंद साबित हुआ है। चर्म रोगों में मूंगफली के तेल को हल्का–सा गर्म कर आहिस्ता–आहिस्ता मालिश करने से लाभ होता है। हाथों, पैरों और जोड़ों के दर्द में भी इसकी मालिश से शीघ्र राहत मिलती है।

बच्चों को कुपोषण का शिकार होने से बचाने के लिए उन्हें नियमित रूप से मूंगफली खिलाई जानी चाहिए। इससे उनकी भूख भी खुलेगी।

दूध पिलाने वाली माताओं को नई मूंगफली भूनकर खिलाने से दूध की मात्रा में बढ़ोत्तरी होती है। साथ ही दूध में प्रोटीन की मात्रा भी बढ़ती है। दूध में अधिक प्रोटीन होना नवजात शिशु के लिए काफी उपयोगी होता है।

मूंगफली का आटा अत्यन्त पौष्टिक, सुपाच्य और पोषक तत्वों से भरपूर माना गया है। मूंगफली के आटे में प्रोटीन की मात्रा दस प्रतिशत मानी जाती है।

बैंगलोर की केन्द्रीय खाद्य अनुसंधानशाला में मूंगफली के अनेक आहार और प्रोटीन–युक्त दूध, दही, मक्खन आदि बड़े पैमाने पर बनाने के प्रयास जारी हैं। मूंगफली का तेल निकालने के बाद उसकी खली पशुओं के लिए पौष्टिक और पूरक आहार का काम देती है, यह खली चूंकि प्रोटीन और वसा युक्त होती है, अतएव जानवरों की सेहत के लिए हितकर भी है।

मूंगफली के छिलके भी बेकार नहीं होते। इन छिलकों का उपयोग गत्ता, हार्ड बोर्ड आदि बनाने में होता है। वैसे इन छिलकों को घरों में ईंधन के रूप में भी काम लिया जाता है। मूंगफली की जड़ों से झाड़ू व तूरे बनाए जाते हैं। इनको जलाकर उत्तम और अच्छी किस्म की खाद बनती है। इस खाद में फॉस्फेट, एसिड, पोटाश और चूने की पर्याप्त मात्रा होने से यह फसल के लिए बहुत उपयोगी होती है।

इस तरह मूंगफली का हरेक हिस्सा खासा उपयोगी है। खासतौर से मूंगफली प्रोटीनयुक्त तथा पौष्टिक होने की वजह से उसका नियमित सेवन किया जाना चाहिए। यह सर्वसुलभ व पौष्टिक आहार है।

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) पर विशेष

देश हमारा

देश हमारा सबसे प्यारा,
बच्चों इसे प्रणाम करो।

हिन्दू, मुस्लिम सिख, ईसाई,
साथ यहाँ सब रहते हैं।
सुख–दुख जो भी आते इन पर,
सारे मिलकर सहते हैं।
सबने मिलकर ठान लिया है,
भारत का यशगान करो।
बच्चों इसे प्रणाम करो।।

मानवता की रक्षा करते,
मानव धर्म निभाते हैं।
ठुकराया हो जिसको जग ने,
हम उसको अपनाते हैं।
ऐसा भारत अपना भारत,
इसका तुम गुणगान करो।
बच्चों इसे प्रणाम करो।।

देश हमारा सबसे प्यारा,
बच्चों इसे प्रणाम करो।

बोधकथा :
जयेन्द्र

ईश्वर मेरे साथ

एक सन्त जंगल के रास्ते से अपने शिष्य के साथ यात्रा पर जा रहे थे। पूरा रास्ता हरे–भरे पेड़ों से घिरा था। जंगली जानवरों की डरावनी आवाजें पल–पल में सुनाई दे रही थी। चलते–चलते रात होने को आई तो सन्त ने रात्रि विश्राम के लिए एक विशाल बरगद के पेड़ के नीचे अपना झोला रख दिया। पास ही बहती नदी में हाथ–मुँह धोकर वे एक पेड़ के नीचे बैठ कर प्रभु के सुमिरण करने लगे। पास ही शिष्य भी बैठ गया। कुछ ही देर बाद शिष्य के कानों में शेर के दहाड़ने की आवाज सुनाई पड़ी। शिष्य भय से थर–थर कांपने लगा। तभी शेर उसे अपनी ओर आता हुआ दिखाई पड़ा। वह फुर्ती से पेड़ पर चढ़ गया। शेर पेड़ के नीचे आया। उसने ध्यान–मग्न बैठे सन्त को सूंघा। उनके चारों ओर घूमकर चक्कर काटा और कुछ क्षण मौन खड़े होकर चुपचाप वापस चला गया। मौन साधे सारा दृश्य पेड़ पर चढ़ा हुआ शिष्य देख रहा था।

कुछ देर बाद सन्त का ध्यान टूटा। दोनों ने कुछ जंगली कन्दमूल खाये और सो गये।

सुबह में नित्य–कर्मों से निबटकर सन्त अपने गंतव्य की ओर चल पड़े। चलते–चलते सन्त को उड़ती हुई एक मधुमक्खी ने डंक मार दिया। उसकी पीड़ा से सन्त एकदम कराह उठे...

शिष्य ने तुरन्त सन्त की ओर विस्मय से देखा और पूछा– आदरणीय गुरुदेव! जब संध्या के समय शेर आया और उसने आपके शरीर को सूंघा तो साक्षात् मृत्यु का आभास पाकर भी आप तनिक भी नहीं घबराये। मगर अब एक छोटी–सी मधुमक्खी के काटने पर ही आप विचलित हो गये? आखिर ऐसा क्यों?

यह सुनकर सन्त ने शिष्य से कहा– जिस समय मैं ध्यान में था तो ईश्वर मेरे साथ था। ईश्वर के साथ होने पर भला किस बात का डर? कैसी चिन्ता? हाँ, इस समय तू मेरे साथ है, इसलिए मेरी चीख निकल गई।

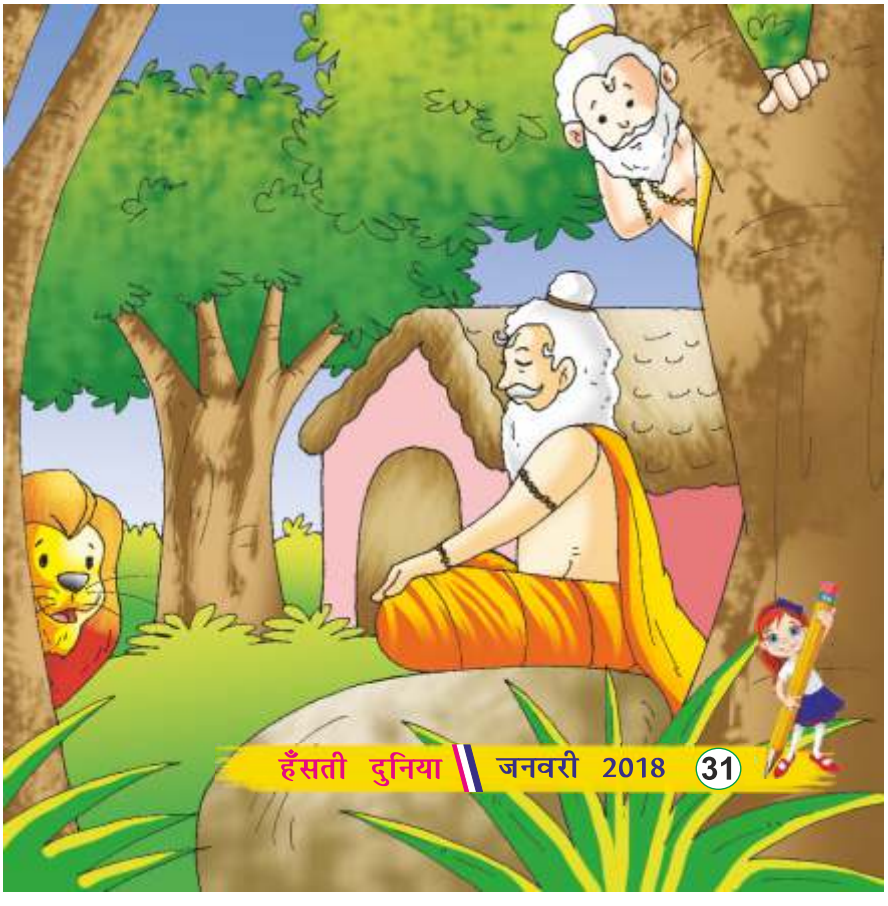

संग्रहकर्ता : श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बड़नेरा)

अनमोल वचन

★ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाए सिद्धांतों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए।

★ आप चाहे जितने भी सही काम करो उसे कोई हमेशा याद नहीं रखेगा, पर आपकी एक भी गलती को कोई कभी नहीं भूलेगा।

★ बड़े परिवार में दुःख बहुत छोटा हो जाता है, पर सुख बहुत बड़ा हो जाता है।

★ कोई भी विचार यदि क्रोध में करेंगे तो हाथ में पछताने के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा।

★ फूल हमेशा बगीचे में ही सुन्दरता पाते हैं।

★ शरीर सबसे बड़ा उपहार है, खुशी सबसे बड़ी दौलत है और विश्वास सबसे बड़ा पवित्र रिश्ता है।

★ कोई भी बात कहने से पहले हमें एक बार शुद्ध मन से अवश्य सोचना चाहिए कि हम जो बात अपने मुख से निकाल रहे हैं उसका परिणाम अच्छा रहेगा या बुरा।

★ जो इन्सान, अपनी जरूरतें (इच्छाएं) सीमित कर सादगी जैसा आचरण व सरल स्वभाव के साथ जीवन जीता है वह सदा सुखी रहता है।

★ बीती बात के लिए शोक तथा भविष्य के लिए निरर्थक चिन्ता न करके वर्तमान के लिए प्रयत्नशील रहने वाला ही ज्ञानी है।

★ निकृष्ट साधनों से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती, शुद्ध उद्देश्य के लिए साधन भी शुद्ध होने चाहिए।

★ जो व्यक्ति विकास के लिए खड़ा है उसे हर एक रूढिवादी चीज की आलोचना करनी होगी, उससे अविश्वास करना होगा तथा उसे चुनौती देनी होगी।

★ एक सिद्धांत को वास्तविकता के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।

★ मिट्टी के बंधन से मुक्ति पेड़ के लिए आजादी नहीं है।

★ हम इस उम्मीद में जीते हैं कि खूबसूरत याद बन सकें।

★ लोभी को पूरा संसार मिल जाए तो भी वह भूखा रहता है, लेकिन संतोषी का पेट एक रोटी से ही भर जाता है।

★ जैसे ही नकारात्मक विचारों पर सकारात्मकता हावी होती है, वैसे ही सकारात्मक नतीजों की शुरुआत हो जाती है।

★ बुद्धिमान व्यक्ति अपने शत्रुओं से भी बहुत–सी बातें सीखते हैं।

★ शिक्षा के बिना मानव पशु के समान है।

★ पुस्तक पास में हो तो मित्रों की कमी नहीं खटकती है।

★ जो जैसी संगति करता है, वैसा ही फल पाता है।

★ आलस्य एक प्रकार की हिंसा है।

★ मानव सेवा से बढ़कर कोई नैतिक नियम नहीं है।

★ काम की अधिकता नहीं अनियमितता ही आदमी को मार डालती है।

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

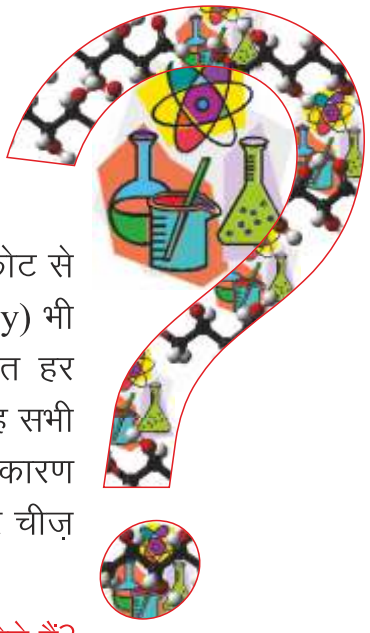

प्रश्न : अंतरिक्ष में हर चीज़ गतिमान क्यों है?

उत्तर : वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी की उत्पत्ति एक विस्फोट से हुई थी। उस समय बहुत अधिक मात्रा में ऊर्जा (Energy) भी निकली थी। उस ऊर्जा के कारण ब्रह्मांड में उपस्थित हर पदार्थ में विस्फोट हुआ। चूंकि आकाशगंगा, तारे और ग्रह सभी उन पदार्थों से मिलकर बने हैं। अतः ये ऊर्जा के कारण एक–दूसरे से दूर जा रहे हैं। फलस्वरूप, अंतरिक्ष में हर चीज़ गतिमान है।

प्रश्न : ट्रक अथवा बस के पिछले पहियों में दो–दो टायर क्यों होते हैं?

उत्तर : ट्रक अथवा बस के पिछले भाग पर भार (Weight) अधिक होता है। इसी कारण से इसके पिछले भाग में दो–दो पहिये लगाए जाते हैं। दो पहियों के प्रयोग से क्षेत्रफल में भी वृद्धि होती है तथा दाब भी कम हो जाता है। फलस्वरूप, बस अथवा ट्रक आसानी से चल सकते हैं।

प्रश्न : ज्वालामुखी के फटने पर तापमान में गिरावट क्यों आती है?

उत्तर : ज्वालामुखी के फटने पर सर्वप्रथम भाप निकलती है। इसके साथ ही साथ कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), क्लोरीन (Cl_2), हाइड्रोजन (H_2) एवं अन्य गैसें भी निकलनी शुरू हो जाती हैं। तत्पश्चात् हाइड्रोजन एवं क्लोरीन गैसें परस्पर पानी के साथ संयोग करके रासायनिक क्रिया करती हैं। फलस्वरूप, अम्लीय वर्षा (Acid Rain) होती है। इस अम्लीय वर्षा के कारण ही हवा में एक ऐसी परत बनने लग जाती है जिससे तापमान में गिरावट आ जाती है।

प्रश्न : बिच्छू और ततैया आदि के काटने पर लोहा रगड़ने से जहर क्यों उतर जाता है?

उत्तर : दरअसल, अम्ल (Acid) और क्षार (Base) मिलकर लवण (उदासीन) बनाते हैं। बिच्छू और ततैये के डंक में अम्ल पाया जाता है जो शरीर से क्रिया करके तीव्र जलन उत्पन्न करता है। लोहा क्षारीय प्रकृति की धातु होती है। जब बिच्छू और ततैये के काटने पर लोहा रगड़ा जाता है तो उदासीनीकरण (Neutralisation) की क्रिया होती है। फलस्वरूप, शरीर में जहर (poison) का असर कम होना शुरू हो जाता है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

तुम करोगी तैयारी?
अरे! छोड़ो, सारी तैयारी मैं खुद कर लूँगी।
देखो! मैं सारी लाईट्स ले आई।
तुम सब अब खड़े होकर देखो।
अब तुम देखना हमारा
पार्क कैसे जगमगाएगा।

धड़ाम!
अरे! अरे! मैं तो गिर गई।

अब कुछ फर्क नहीं पड़ता, सारी तैयारी तो हो ही चुकी है।
चलो! चलो! हम सब मिलकर अब truth and dare खेलते है।

किट्टी! आज तुमने इतना सारा काम कैसे कर लिया?
मैंने सभी को हमेशा से तंग किया है। लेकिन आज नए साल में, मैं एक प्रण लेना चाहती हूँ कि अब मैं किसी को तंग नहीं करुँगी।

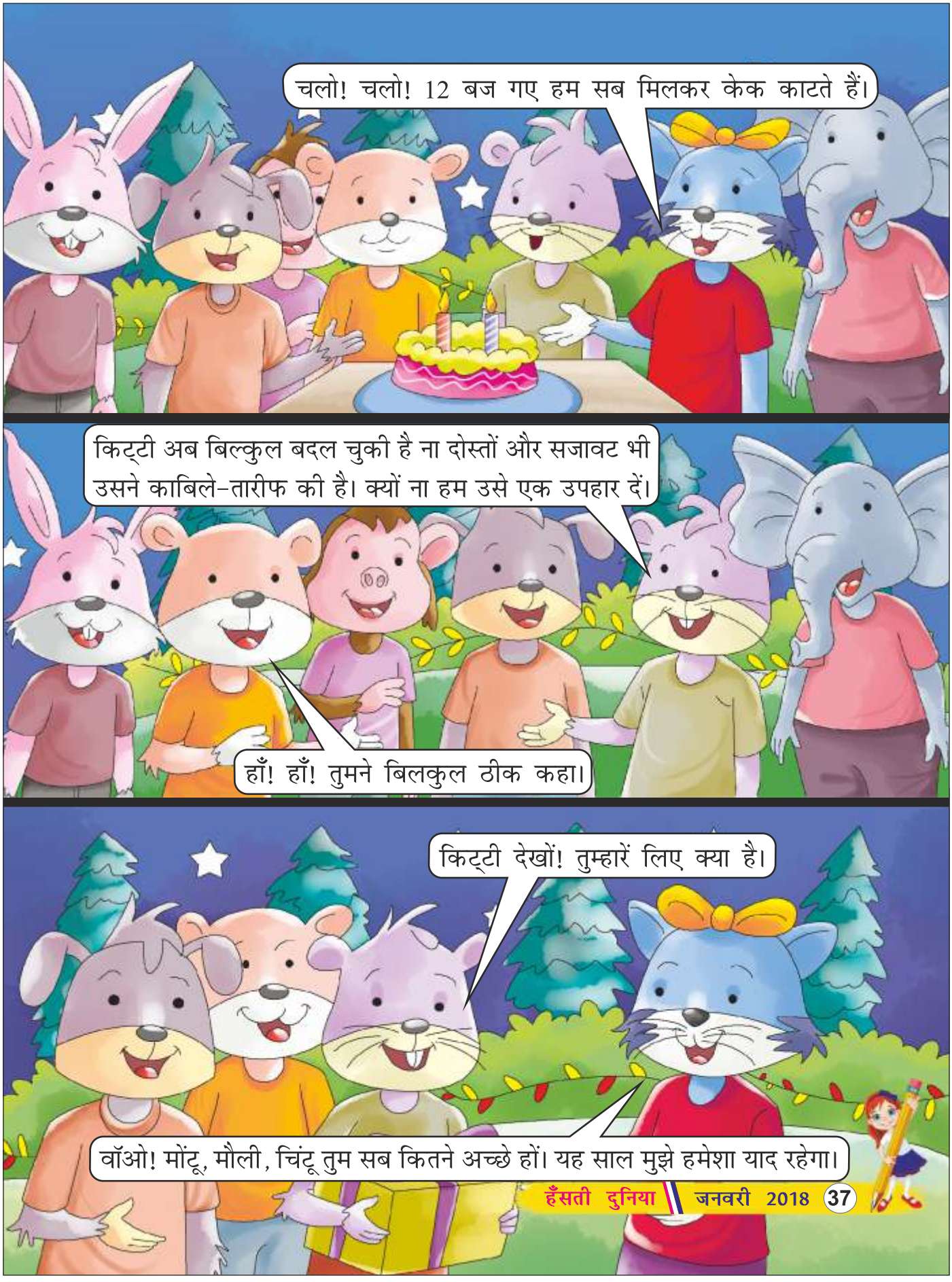
चलो! चलो! 12 बज गए हम सब मिलकर केक काटते हैं।
किट्टी अब बिल्कुल बदल चुकी है ना दोस्तों और सजावट भी उसने काबिले-तारीफ की है। क्यों ना हम उसे एक उपहार दें।
हाँ! हाँ! तुमने बिलकुल ठीक कहा।
किट्टी देखों! तुम्हारें लिए क्या है।
वॉओ! मोंटू, मौली, चिंटू तुम सब कितने अच्छे हों। यह साल मुझे हमेशा याद रहेगा।

कभी न भूलो

संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

★ सत्य का प्रभाव स्वतः प्रकट होकर रहता है। सत्य में असीमित बल व तेज होता है। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ जिसका मन तृष्णा से रहित है, जो सतर्क और जागृत है, वह कभी भय से पीड़ित नहीं होता।

★ भय, क्रोध, आलस्य, राग, द्वेष आदि दुर्गुणों को छोड़ने में देरी नहीं करनी चाहिए। – महात्मा बुद्ध

★ ईमानदारी और परिश्रम से प्राप्त धन– शुभ फल देने वाला होता है। जो धन बेईमानी और शोषण से प्राप्त होता है वह अनर्थकारी होता है।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

★ जो भगवान को जान लेता है वह पाप करने से बच जाता है।

– महाकवि संत गंगादास

★ आत्मविश्वास असम्भव लगने वाले कार्यों को भी सम्भव बना देता है।

– पंडित श्रीराम आचार्य

★ शत्रु भी जिसके गुणों की प्रशंसा करते हैं, वही पुरुष वास्तव में पुरुष है।

– गणेश शंकर विद्यार्थी

★ बुराई का सम्पर्क हमारी अच्छी आदतों को भी खराब कर देता है। – बाइबिल

★ प्रेम की शक्ति घृणा की शक्ति की अपेक्षा अनन्त गुणी और अधिक प्रभावशाली है।

– स्वामी विवेकानन्द

★ कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

– अरविन्द घोष

★ विद्वानों की संगति से ज्ञान मिलता है, ज्ञान से विनय, विनय से प्रेम और लोग प्रेम से क्या नहीं प्राप्त कर सकते।

– साहित्य दर्पण

★ संसार में कोई भी ऐसा नहीं है जो नीति का जानकार नहीं है। किन्तु उसके प्रयोग से लोग विहीन होते हैं। – कल्हण

★ परोपकार में लगे हुए सज्जनों की प्रवृत्ति पीड़ा के समय भी कल्याणकारी होती है।

– बाणभट्ट

★ दुनिया में सबकुछ दोबारा मिल सकता है पर मां–बाप नहीं मिलते। – सिसरो

★ उत्तम शिक्षा कहीं से भी मिले तो लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। – चाणक्य

दो बाल कविताएं : कमल सिंह चौहान

नये साल का कदम

नया साल है आ गया,
सबके मन को भा गया।
फूलों ने डाला है डेरा,
ठंडा मौसम छा गया।

चिंकू, रिंकू, पिंकू, मोना,
सुबह के बाद कभी न सोना।
समय–समय पर काम करो सब,
सफल सदा जीवन में होना।

मंजिल पर तुम बढ़ते जाओ,
अपनी तुम पहचान बनाओ।
नये साल ने कदम बढ़ाये,
सबको तुम फिर गले लगाओ।

फूलों जैसे खिलते जाओ,
पानी जैसे मिलते जाओ।
नाचो गाओ बांटो प्रेम,
नया साल आनंद मनाओ।

नये वर्ष की धूप

फूल पत्ते और डाली,
नये वर्ष की धूप निराली।
कलियां खिल गईं भौरे झूमें,
सूरज ने अब किरणें डालीं।

नये वर्ष का दीप जलाओ,
सबको अपने गले लगाओ।
भेदभाव न कभी करो,
बातें छोड़ो कल वाली।

जीवन में हो उल्लास नया,
शत्रु न हो कभी मित्र नया।
सुबह की किरणों संग खेलो,
बातें करो अब खुशबू वाली।

प्रेम से सबसे मिलना सीखो,
नित संयम से रहना सीखो।
भला हमेशा सबका सोचो,
रिंकू, मारिया और सैफाली।

प्रेरक–प्रसंग : श्यामसुन्दर गर्ग

कीमती दाने

एक बार एक सम्राट अपने मंत्रियों के साथ कहीं जा रहे थे। उनके आगे–आगे एक किसान बैलगाड़ी पर धान की बोरियां रखकर अपने घर जा रहा था। धान की किसी बोरी में कहीं छेद था, जिससे धान के कुछ दाने रास्ते में गिरते जा रहे थे। सम्राट ने दाने देखकर कहा, 'रथ रोको। रास्ते में हीरे बिखरे पड़े हैं।'

मंत्री ने चारों तरफ देखा, फिर बोला– 'महाराज यहाँ तो कहीं हीरे दिखाई नहीं पड़ते। आपको भ्रम हुआ है।' लेकिन सम्राट रथ से उतरे और धान के एक–एक दाने को चुन–चुनकर अपने अंगोछे में रखने लगे। मंत्री को आश्चर्य हुआ। उसने कहा– 'राजन्, हमारे खाद्य भण्डार अनाज से भरे पड़े हैं। राज्य में अनाज की कोई कमी नहीं है। आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?'

सम्राट बोले– यह धान के दाने नहीं, हीरे के कण हैं। यदि हम एक–एक दाने का अनादर करने लगेंगे तो एक दिन वह समय भी आ सकता है जब हमारे खाद्य भंडार खाली हो जायेंगे।

मंत्री बोला– 'राजन्, लेकिन एक–एक दाने से कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। इतने दाने तो किसान के खेत में गिरकर सड़ जाते हैं।

सम्राट बोले– 'ये धान के दाने नहीं, अन्नपूर्णा है। अन्नपूर्णा को इसी तरह पैरों के तले रौंदा गया तो एक दिन हम अन्न को तरस जायेंगे।

जिस तरह एक–एक बूंद से समुद्र भरता है, उसी तरह एक–एक दाने के संरक्षण से ही हमारे अनाज के भण्डार भरते हैं। मंत्री और सम्राट की बातचीत किसान के कानों में पड़ी। वह अपनी बैलगाड़ी रोककर सम्राट के पास आया और बोला, 'राजन् हम किसान हैं और अन्न से ही हमारी पहचान है लेकिन हम अनाज का मूल्य नहीं समझते क्योंकि हमारी सोच अपने परिवार तक सिमटी हुई है। लेकिन आप राज्य की जनता की भूख की पीड़ा समझते हैं, इसलिए आपको अनाज के एक–एक दाने की कीमत मालूम है।' यह कहकर किसान ने सम्राट से क्षमा मांगी।

ऐतिहासिक कहानी : रूपनारायण काबरा

चन्द्रगुप्त और हेलेन

सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात उसके उत्तराधिकारी सेनापति सेल्यूकस ने अपने सम्राट के अधूरे काम को पूरा करने का संकल्प लिया। उसने भी भारत में आक्रमण किये और पंजाब में आकर टिक गया।

चाणक्य के परामर्श एवं निर्देश के अनुसार राजकुमार चन्द्रगुप्त मौर्य यूनानी सेना शिविर में उनकी रणनीति एवं योजना को जानने समझने के लिये भेष बदलकर घुस गया। एक दिन एक मस्त हाथी के चंगुल में सेल्यूकस की पुत्री हेलेन पड़ गई। हाथी ने हेलेन को अपनी सूंड में लपेटकर उठा लिया। सैंकड़ों यूनानी सिपाही वहाँ थे लेकिन हेलेन को हाथी से बचा लेने की हिम्मत किसी की नहीं हुई।

चन्द्रगुप्त ने भी यह देखा। वह बहादुर था। लड़की हेलेन के प्राण संकट में देखकर वह अपने को रोक नहीं सका। वह भूल गया कि वह शत्रु शिविर में है। जरा–सी भी देर हेलेन के लिये जानलेवा सिद्ध हो सकती थी। वह झपटा और अपने बल एवं कौशल से हाथी को नियंत्रण में करके हेलेन को बचा लिया।

सेल्यूकस अत्यन्त प्रसन्न हुआ और जब उसे चन्द्रगुप्त का असली परिचय प्राप्त हुआ। वह अपने शत्रु चन्द्रगुप्त की बहादुरी और इन्सानियत से अत्यन्त प्रभावित हुआ और उसने आगे की जीत के इरादे छोड़ दिये। उसने चन्द्रगुप्त से मित्रता की और अपनी पुत्री हेलेन का विवाह उससे कर दिया। बेशुमार दौलत और काबुल–कंधार का राज्य चन्द्रगुप्त को भेंट स्वरूप दिये गये और मेगस्थनीज को अपना राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा।

जानकारीपूर्ण लेख :
कैलाश जैन

अनुशासित चींटियों का एक दल

अफ्रीका के जंगलों में चींटियों की एक विशेष प्रजाति पायी जाती है। ये चींटियां लाखों–करोड़ों की संख्या में समूह बनाकर रहती हैं। इन चींटियों के गहन वैज्ञानिक अध्ययन के बाद जो निष्कर्ष निकाले गये हैं, वे अत्यंत रोचक तथा चौंकानेवाले हैं। इन चींटियों की अलग से अपनी एक संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था है, जिनमें मजदूर, इंजीनियर, अंगरक्षक, भोजन सामग्री ढोने वाली चींटियां आदि कई वर्ग हैं। चींटियों की प्रमुख रानी होती है, जो मात्र अंडे देने का कार्य करती है। अफ्रीका के जंगलों में रहने वाले पशु और मनुष्य इन चींटियों से ही सबसे अधिक खौफ खाते हैं। जंगलों में चरते हुए पशुओं को ये चींटियां करोड़ों की तादाद में आकर चारों तरफ से घेर लेती हैं और आधे घंटे से भी कम समय में घोड़े और बैल जैसे जानवर को खत्म कर देती हैं। घटनास्थल पर पशु की मात्र हड्डियां पड़ी मिलती हैं। यह चींटी–दल इतने गुपचुप और सुनियोजित तरीके से हमला करता है कि शिकार के बचने या भाग निकलने का कोई अवसर नहीं मिल पाता।

वैसे तो ये चींटियां अंधी होती हैं, किंतु अपने सिर पर लगे दो मोटे तनों, जिन्हें 'एंटीना' कहा जाता है, के द्वारा अपने आसपास की जानकारी निरंतर प्राप्त करती रहती हैं। इनमें सूंघने की विलक्षण शक्ति

होती है। जब चींटी–दल अपने अभियान पर जा रहा होता है तो आगे की पंक्ति की चींटियां एक विशेष प्रकार का अम्ल अपने पीछे छोड़ती चलती हैं। इस अम्ल की गंध से पीछे आ रही चींटियां अपना रास्ता निर्धारित करती हैं।

अभियान के दौरान रास्ते में यदि कोई पानी का नाला या नदी आ जाये तो इंजीनियर चींटियां एक–दूसरे के पैरों में पैर फंसाकर पुल बना देती हैं, जिस पर होकर पूरा चींटी दल गुजर जाता है और उसके बाद चींटियों का यह पुल सिमटने लगता है। गर्मी और धूप के दौरान इंजीनियर चींटियां रास्ते पर एक मिट्टी की खोखली परत बिछा देती हैं, जिसके नीचे पूरा चींटी दल आराम से अपना रास्ता पार करता है।

इन चींटियों में प्रमुख चींटी को अंगरक्षक चींटियां हमेशा घेरकर चलती हैं। चींटी दल का अपना कोई घर नहीं होता। घूमते हुए खाते रहना ही इनका काम है। ये रात में नहीं चलतीं। रात्रि–विश्राम के समय ये रानी चींटी को घेरकर एक गोल घेरा बना लेती हैं। सुबह होते ही पुनः अपने अभियान पर निकल पड़ती हैं। सोलह दिन तक लगातार घूमते रहने के बाद सत्रहवें दिन यह चींटी दल अपना शिविर लगाता है क्योंकि सोलह दिन की अवधि के बाद रानी चींटी को अंडे देने होते हैं।

शिविर–निर्माण में मजदूर चींटियां विशेष भूमिका अदा करती हैं। ये किसी विशाल वृक्ष पर चढ़कर एक–दूसरे की कमर में पैर फंसाकर इस प्रकार घेरे बना लेती हैं कि वह अन्य चींटियों के लिए कोठरियों का काम करें। इसके बाद रानी चींटी सबसे अधिक सुविधाजनक कोठरी में अंडे देती है, जो कम से कम एक हजार होते हैं। अंडे देने के बाद अन्य चींटियां उन अंडों को सेवा गृह तक लाती हैं, जहाँ अंडों के चारों तरफ रेशम–सा मुलायम कोया बुन देती हैं। करीब पंद्रह दिन बाद उन अंडों में से बच्चे निकल आते हैं। बच्चों की पर्याप्त देखभाल की जाती है। इस सारी प्रक्रिया के बाद चींटी दल पुनः अपनी यात्रा पर रवाना हो जाता है।

पूर्ण अनुशासित और नियमित दिनचर्या के माध्यम से यह चींटी दल निरंतर यात्राएं करता रहता है। इनकी भयानकता और अनुशासनप्रियता के कारण इन्हें 'सैनिक चींटी' के नाम से भी जाना जाता है। ★

हँसती दुनिया पढ़िए,
जीवन में आगे बढ़िए।

पढ़ो और हँसो

एक आदमी के सिर से खून निकल रहा था।

वह डॉक्टर के पास पहुँचा तो डॉक्टर ने पूछा– ये कैसे हुआ?

आदमी बोला– डॉक्टर साहब! मैं हथोड़े से पत्थर तोड़ रहा था। तभी मेरी पत्नी ने कहा– ''कभी तो अपना दिमाग इस्तेमाल किया करो।''

★----------★

मेहमान : बेटा, तुम्हारा जन्म किस दिन हुआ था?

बच्चा : शुक्रवार को। और आपका?

मेहमान : रविवार को।

बच्चा : झूठ। रविवार को तो छुट्टी होती है।

★----------★

पिता : तुम्हारी क्लास में सबसे मेहनती बच्चा कौन है?

बेटा : जी, मैं हूँ।

पिता : वो कैसे?

बेटा : जब सारे बच्चे बेंच पर बैठे रहते हैं, उस समय मैं बेंच पर खड़ा रहता हूँ।

– विकास कुमार (बेगूसराय)

मम्मी : बबलू, तुम आज स्कूल से जल्दी क्यों आ गये?

बबलू : मम्मी, मेरा गबरू के साथ झगड़ा हो गया और 'सर' ने मुझे क्लास से बाहर निकाल दिया।

मम्मी : लेकिन तूने गबरू के साथ झगड़ा क्यों किया?

बबलू : मुझे आज जल्दी घर आना था इसीलिए।

★----------★

एक कैदी दूसरे कैदी से बोला– कोई तुमसे मिलने क्यों नहीं आता?

दूसरा कैदी बोला– रिश्तेदार तो बहुत सारे हैं लेकिन सभी यहाँ जेल में ही हैं।

★----------★

विद्यार्थी : सर हम कुछ भी न करें तो क्या आप हमें दण्डित करोगे?

सर : नहीं।

विद्यार्थी : तब तो ठीक है, आज मैंने होमवर्क नहीं किया।

– सुरेन्द्र कुमार (हरिहरपुर)

शिक्षक : विवेक तुम आज दस मिनट लेट आए हो।

विवेक : नहीं सर, पांच मिनट से तो मैं बाहर खड़ा बहाना ढूंढ़ रहा था कि मैं क्या बताऊँ? – आजाद कुमार (बड़ौदा)

★----------★

शिक्षक : पप्पू बताओ, अकाल और बाढ़ में क्या फर्क है?

पप्पू : सर, अकाल में नेता मोटर और जीपों में घूमते हैं और बाढ़ में हैलीकॉप्टर में घूमते हैं।

★----------★

पिंटू : मम्मी, मुझे खांसी की दवा दो।

मम्मी : बेटा, तुझे क्या करना है?

पिंटू : मम्मी टेपरिकॉर्डर में खर्र–खर्र की आवाज निकल रही है, इसीलिए मुझे उसमें थोड़ी डालनी है।

★----------★

राजू ड्राईंगरूम की दीवारों पर ड्राईंग बना रहा था। उसकी मम्मी ने गुस्से में आकर राजू से कहा– राजू ये क्या कर रहे हो?

राजू बोला– मम्मी, ये ड्राईंगरूम है इसीलिए तो मैं दीवारों पर ड्राईंग कर रहा हूँ।

– संकेत (दाहोद)

बच्चे ने अपने पिताजी से पूछा– पिताजी! क्या आप आँख बन्द करके 'साइन' कर सकते हैं?

पिताजी बोले– हाँ, क्यों नहीं। एकदम आसानी से कर सकता हूँ।

बच्चा : तो फिर आप मेरे रिपोर्ट कार्ड पर आँख बन्द करके 'साइन' कर दीजिये।

★----------★

वर्ग पहेली के उत्तर

1 अ	फ्री	2 का		3 अ	4 र	ण्य
ब्रा		5 वे	टि	क	न	
6 हि	ले	री		ब		7 हि
म			8 गि	र	गि	ट
	9 अ	ब्दु	ल			ल
10 ती	न		11 ह	रि	12 द्वा	र
	13 सु	पा	री		प	
14 धो	नी			15 ग्या	र	ह

रोचक प्रेरक–कथा : जयेन्द्र

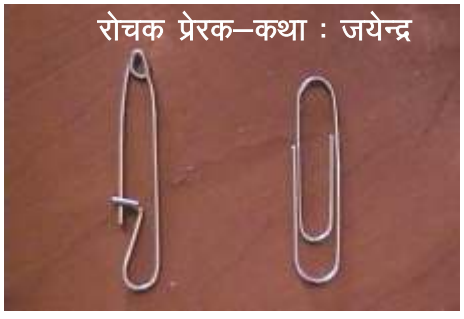

रंग लाई, आलसी की तरकीब

एक आलसी व्यक्ति था, जिसका नाम वाल्टर था। कोई काम–धाम नहीं करता। कभी बच्चों के संग खेला करता तो कभी पॉर्क में जाकर तितलियां पकड़ता और झूले में झूला करता, भूख–प्यास लगने पर थका–थका घर आता, पेटभर भोजन करता और बिस्तर पर लेट जाया करता।

वाल्टर की पत्नी बड़ी परेशान थी। एक तो घर का कार्य करती, दूसरे कई छोटे–मोटे कार्य जैसे सुबह अखबार और ब्रेड बेचना, दोपहर को फल–सब्जियां बेचना, घरों में जाकर साफ–सफाई करना आदि। इनसे जो आय हुआ करती, उससे वह अपना घरखर्च चलाया करती। वह अपने पति से जब कभी पैसे मांगती तो वह उल्टे उससे कहा करता– 'तुम पैसा बहुत कम कमाती हो, काम करने से कतराती हो?' यह सुनकर बेचारी पत्नी चुप हो जाया करती।

एक दिन पत्नी ने अपने पति को बिस्तर से उठाते हुए कहा– 'मुझे पिकनिक पर जाना है, अतः तुम मेरे फ्राक के लिए एक बटन बाजार से ले आओ क्योंकि मेरे नये फ्राक का एक बटन टूटा हुआ है।

आलसी पति ने मन में सोचा– 'बड़ी मुसीबत है, जेब में एक पैसा नहीं, भला बटन कैसे आएगा?' तभी उसने अपने बिस्तर के पास रखे एक तार के 4–5 इंच लम्बे टुकड़े को मोड़कर कहा– 'लो, बटन की जगह इसे लगा लो।' पत्नी ने जल्दी के कारण लगा लिया....।

मुड़े हुए तार से काम बनते ही वाल्टर के दिमाग में एक शानदार आइडिया उभरा। दिमाग में 'सेफ्टी पिन' का चित्र उभरा। उसने एक दूसरे तार को मोड़कर नई आकृति को जन्म दिया और पहुँच गया एक कारखाने के मालिक के पास।

कारखाने के मालिक ने उसकी खोज की उपयोगिता समझकर यह फार्मूला उससे 500 डालर में खरीद लिया। आगे चलकर उसने उस मुड़े तार के रूप को थोड़ा सुधार कर अपने कारखाने से 'सेफ्टी पिन' के नाम से निकाला।

यह 'सेफ्टी पिन' लोगों को बड़ा पसन्द आया क्योंकि यह एक उपयोगी वस्तु थी।

पहली बार कारखाने के मालिक ने दो सप्ताह में 30,000 सेफ्टी पिन बेचे। उसके बाद उनकी डिमांड बढ़ने लगी। दुनिया के कई मुल्कों में भी उसके बनाये 'पिन' निर्यात होने लगे।

कारखाने का मालिक अब वाल्टर को प्रतिमाह 800 डालर की रॉयल्टी भी देने लगा। इस तरह वाल्टर बैठे–बैठे ही अपना जीवन और अधिक आराम से गुजारने लगा।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

चिड़िया

सुनहरी चिड़िया आती रोज,
गेहूं–बाजरा खाती रोज।

नन्हें–मुन्ने प्यारे–प्यारे,
बच्चे संग में लाती रोज।

खा–पी अपना दाना–पानी,
फुर्र से उड़ जाती रोज।

चीं–चीं चूं–चूं करती घूमे,
फेरे घर के लगाती रोज।

सुन गोलू की मीठी बोली,
पर अपने फड़फड़ाती रोज।

सूरज उगने से पहले ही,
सुबह हमको जगाती रोज।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

तोताराम

तोताराम, तोताराम,
क्यों करते इतना आराम।
अब फिर टेर लगाओ ना,
मिठ्ठू–मिठ्ठू चिल्लाओ ना।।

पानी पीलो, मिर्ची खालो,
फिर अच्छी–सी तान सुना दो।
दूध–रोटी है तैयार,
राम–राम कह दो इक बार।।

सुन्दर–सा घर बनवाएंगे,
झूला उसमें लगवाएंगे।
मान भी जाओ बात हमारी,
करो झूलने की तैयारी।।

नवम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **अभय असनानी** 10 वर्ष
गली चंदूलाल वकील,
रोशनी आई हॉस्पिटल के पास,
चर्च रोड, गोधरा (गुजरात)

2 **सोमजनी–साहिल** 14 वर्ष
योगेश्वर सोसायटी,
पार्वती नगर, गोधरा (गुजरात)

3 **सुदीक्षा** 13 वर्ष
गाँव : सेमरी बाजार,
पोस्ट : महमूदपुर सेमरी,
जिला : सुलतानपुर (यू.पी.)

4 **महक सोनी** 13 वर्ष
दिल्ली पब्लिक स्कूल, झाकड़ी,
जिला : शिमला (हि.प्र.)

5 **दिव्या कोहली** 15 वर्ष
रेलवे स्टेशन के पास,
मराण्डा, जिला : कांगड़ा (हि.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

प्रियंका (पंचमहल, गोधरा),
पलक (मालनूं), माधव (मिरानी, गोधरा),
दिशा सिंह (अरला),
हर्षिता (पश्चिम विहार, दिल्ली),
सबीर कुमार (पंजाला),
पीहू (जीरकपुर), अमृता (सैरायचन्द),
लक्ष्य (घेदा), आन्या (हितमपुरा, दिल्ली),
उमंग (राणाप्रताप बाग, दिल्ली),
दिपांकर (मलोट),
यवनिका (भरमोटी कलां),
भूमिका (कोसी कलां),
सुहावनी (मोतियाखान, दिल्ली),
समता (बोईसर, पालघर),
निष्ठा (कर्णेश्वर, गुलबर्गा),
हर्षित (इन्दिरा नगर, लखनऊ),
पीयूष (बिन्नागुड़ी, जलपाईगुड़ी),
खुशी (नकोदर), रोशनी (यमुना नगर),
प्रयांशी (अलीगढ़),
सिमरन (आदर्श नगर, फगवाड़ा),
नंदिनी (सेवालीपेठ),
अमन गोयल (सैपऊ)।

जनवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 जनवरी** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **मार्च अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

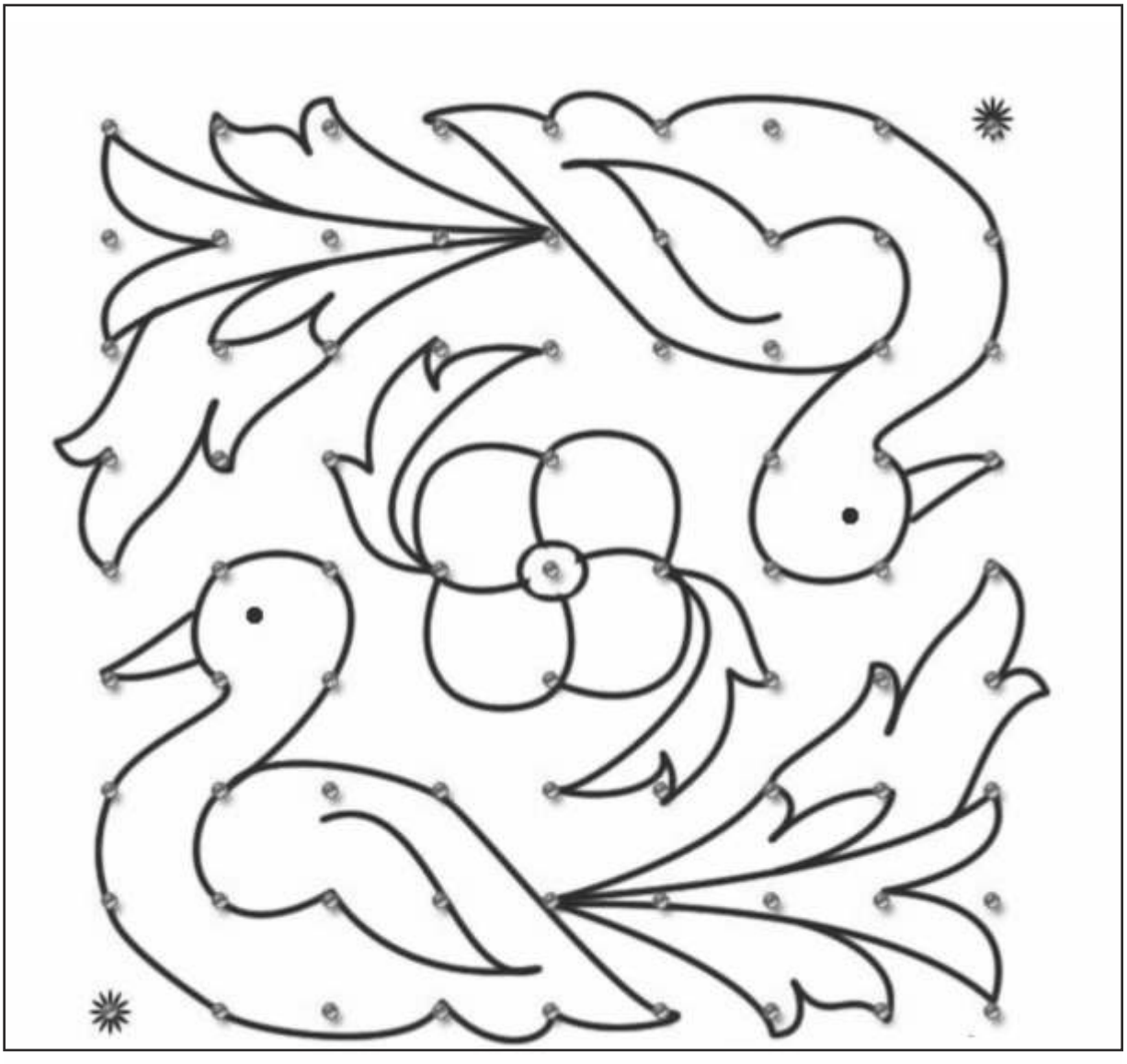

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र

आया है नववर्ष

खुशियों का पैगाम लिए,
आया है नववर्ष।
उमंगें हिलोरे लेती,
मन में है बहुत हर्ष।।

उसकी कदमों की आहट सुन,
जर्रा जर्रा मुस्कुरा रहा है।
महक रही हैं वादियां,
अम्बर नेह बरसा रहा है।।

आशीष देती दिशाएं,
हो मंगलमय नववर्ष।
खुशियों के पालनें में,
झूल रही हैं तितलियां।।

मौसम ने ली अंगड़ाई,
सज संवर गयी कलियां।
गुनगुना रहे भवरें,
हो जीवन में उत्कर्ष।।

खुशियों का पैगाम लिए,
आया है नववर्ष।।

– मीरा सिंह 'मीरा' (डुमराँव)

हँसती दुनिया बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका ज्ञान की ज्योति है। बच्चों में भक्ति एवं देशभक्ति पैदा कर ज्ञान–विज्ञान की जानकारीपुर्ण कहानियां और कविताएं हर तरह से हँसती दुनिया पत्रिका ज्ञान का सागर है।

– पवन बत्तरा (पंचकूला)

सर्दी आई

सर्दी आई, सर्दी आई,
ठंड के साथ कोहरा भी लाई।

कागा आ मुंडेर पर बैठा,
लगता सूरज भी है हमसे रूठा।
दिन में रहती सफेद सी चादर,
रात में छाया घना अंधेरा।

सर्दी के भय से कांपें थर्र थर्र,
पहन लिये हैं, स्वेटर और मफलर।
अब चले काम ना बिना रजाई,
सर्दी आई, सर्दी आई।

धरती पर छाया विकट ये कोहरा,
ठंड से कांपे मन ये मोरा।
ठंड से घबराएं जब बूढ़े, बच्चे,
आग तापकर ठंड मिटाई।

सर्दी आई, सर्दी आई,
ठंड के साथ कोहरा भी लाई।

– डॉ. रतिराम सिंह (अमरोहा)

मैं हँसती दुनिया का बहुत पुराना पाठक हूँ। इसमें प्रकाशित प्रेरक–प्रसंगों से मुझे और मेरे परिवार के सदस्यों को प्रेरणा मिलती है। अन्य मनोरंजक एवं लाभदायक लेख भी विद्यार्थियों और पाठकों का सही मार्गदर्शन करते हैं।

यह पत्रिका पाठकों को सार्थक मानसिक खुराक प्रदान करती है। इस उत्कृष्ट पत्रिका के लिए मैं सम्पादक जी एवं सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूँ।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी प्यारी हँसती दुनिया, दुनिया के कोने–कोने में पहुँचे।

– यूनीश खुराना (गुड़गांव)

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया (चार भाषाओं में)

सन्त निरंकारी (ग्यारह भाषाओं में)

एक नज़र (तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
31, Pratapganj,
VADODARA-390022 (Guj.)
Ph. 0265-2750068

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan,
KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)